हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं

अध्याय 4

परमेश्वर की योजना और कार्य

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
परमेश्वर की योजना 1
बाइबल आधारित दृष्टिकोण 2
ईश्वरीय सर्वव्यापकता 3
ईश्वरीय उत्कृष्टता 5
धर्मवैज्ञानिक मान्यताएँ 7
उग्र दृष्टिकोण 7
नरम दृष्टिकोण 10
परमेश्वर के कार्य 15
सृष्टि 15
अदृश्य आयाम 16
दृश्य आयाम 19
विधान 21
द्वितीय कारकों का महत्व 22
परमेश्वर और द्वितीय कारक 24
उपसंहार 27

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं

अध्याय चार

परमेश्वर की योजना और कार्य

परिचय

किसी न किसी समय पर हम में से बहुतों ने भविष्य के लिए बड़ी बड़ी योजनाएँ बनाई हैं, अर्थात् ऐसे कार्यों की योजना जिन्हें हम भविष्य में पूरा करने की आशा करते हैं। छोटे बच्चे सदैव कल्पना करते हैं कि अद्‌भुत बातें भविष्य में उनके लिए रखी हुई हैं। जवान लोग निरंतर बड़े-बड़े लक्ष्य निर्धारित करते हैं। परंतु जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे यह स्पष्ट हो जाता है कि हम अपनी सारी नहीं, परंतु कुछ ही योजनाओं को पूरा कर पाएँगे। अंततः हमारे पास वह सब पूरा करने की दूरदृष्टि या क्षमता नहीं होती जो हम करना चाहते हैं। कई रूपों में, परमेश्वर के विषय में इसके बिलकुल विपरीत होता है। बाइबल दर्शाती है कि परमेश्वर के पास एक योजना है। परंतु उन योजनाओं के विपरीत जिन्हें आप और मैं बनाते हैं, परमेश्वर की योजनाएँ असफल नहीं होंगी। अंततः उसके पास वह सब पूरा करने की दूरदृष्टि और क्षमता है जिसे वह करना चाहता है।

यह हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, की हमारी श्रृंखला का चौथा अध्याय है। इस श्रृंखला में विधिवत धर्मविज्ञान में परमेश्वर की धर्मशिक्षा, या परमेश्वर-विज्ञान की खोज कर रहे हैं। हमने इस अध्याय का शीर्षक, “परमेश्वर की योजना और कार्य” दिया है। और इसमें हम यह खोज करेंगे कि कैसे सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर की योजना और कार्यों, जिनके द्वारा वह अपनी योजना को पूरा करता है, का अध्ययन किया है।

जैसा कि आपको याद होगा, पिछले अध्यायों में हमने अपना ध्यान परमेश्वर की विशेषताओं पर केंद्रित किया था। यूनानी दर्शनशास्त्र के प्रभाव में धर्माध्यक्षकालीन और मध्यकालीन धर्मविज्ञानियों ने विशेष रूप से परमेश्वर के सार की सिद्धताओं को पहचानने और स्पष्ट करने को प्राथमिकता दी थी। और यही बात सदियों से अधिकांश सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञानियों पर भी लागू होती रही है। परंतु परमेश्वर की विशेषताएँ ही परमेश्वर-विज्ञान का एकमात्र केंद्र नहीं रही हैं। परमेश्वर की धर्मशिक्षा ने परमेश्वर की योजना और वह कैसे अपनी योजना को पूरा करता है, पर भी बहुत ध्यान दिया है।

परमेश्वर की योजना और कार्य पर आधारित हमारा अध्याय दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम ध्यान देंगे कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की योजना के बारे में क्या सिखाता है। और दूसरा, हम परमेश्वर के कार्यों को देखेंगे। आइए पहले यह देखने के द्वारा आरंभ करें कि परमेश्वर की योजना से हमारा क्या अर्थ है।

परमेश्वर की योजना

जैसा कि हमने इस श्रृंखला में देखा है, हमारे द्वारा प्रयोग किए जानेवाले विभिन्न प्रकार के शब्दों के के अतिरिक्त, सुसमाचारिक लोगों ने परमेश्वर की विशेषताओं के विषय में समान अवधारणाओं को भी रखा है। परंतु यह बात तब नहीं कही जाती जब बात परमेश्वर की योजना की आती है। यह विषय काफी विभाजनकारी रहा है क्योंकि यह ईश्वरीय पूर्वज्ञान और पूर्वनिर्धारण जैसे विवादास्पद विषयों को स्पर्श करता है। जानकार सुसमाचारिक लोगों ने सदियों से इन विषयों पर बहुत ही भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों को रखा है। और ऐसी कोई संभावना भी नहीं है कि हम कभी इन पर पूर्ण रूप से सहमत हो पाएँगे। इसलिए

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस अध्याय में हमारा लक्ष्य इन विषयों पर जितना हो सके ऐसे तरीकों में विचार-विमर्श करना होगा जो विभिन्न सुसमाचारिक समूहों में परस्पर समझ और आदर को बढ़ा सकें।

इस लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए हम दो दिशाओं से परमेश्वर की योजना पर ध्यान देंगे। पहली, हम इस विषय पर बाइबल आधारित दृष्टिकोणों की खोज करेंगे — अर्थात् परमेश्वर की योजना या योजनाओं के विषय में पवित्रशास्त्र जो कहता है। और दूसरी, हम ध्यान देंगे कि इन दृष्टिकोणों ने सुसमाचारिक लोगों में विभिन्न धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं की ओर कैसे अगुवाई की है। आइए परमेश्वर की योजना पर बाइबल आधारित दृष्टिकोणों को देखने के द्वारा आरंभ करें।

बाइबल आधारित दृष्टिकोण

विधिवत धर्मविज्ञान में, "योजना," "आदेश" और "परमेश्वर के आदेश" जैसी अभिव्यक्तियों के अपेक्षाकृत विशेष और तार्किक, तकनीकी अर्थ थे। परंतु पवित्रशास्त्र विभिन्न रूपों में इस समान धर्मवैज्ञानिक धारणा से संबंधित कई भिन्न-भिन्न इब्रानी और यूनानी शब्दों का प्रयोग करता है। वे प्रत्यक्ष रूप में परमेश्वर की योजना या योजनाओं के बारे में बात करते हैं, परंतु वे उसके उद्देश्य, उसकी सम्मति या उसके आदेश, उसकी इच्छा और उसके भले आनंद को भी दर्शाते हैं। हमारे मन में इन शब्दों से संबंधित पुराने नियम के इब्रानी शब्द हैं : खाशाव (חָשַׁב) जिसका अनुवाद अक्सर "सोचने," "योजना बनाने," या "निर्धारित करने" के रूप में किया जाता है; ज़ामाम (זָמַם) का अनुवाद सामान्यतः "उद्देश्य रखने" या "योजना बनाने" के रूप में किया जाता है; यात्स (יָעַץ) का अर्थ है "सम्मति देना" या "आदेश देना"; राहतसोन (רָצוֹן) का प्रयोग अक्सर "भावने वाले" या "अनुकूल" के रूप में किया जाता है; और खाफेत्स (חָפֵץ) का अनुवाद भी "भावने वाले" के रूप में किया जाता है। हमें नए नियम के यूनानी शब्दों को भी जोड़ना चाहिए : बूले (*βουλή*) का प्रयोग अक्सर "उद्देश्य," "सम्मति," "आदेश" या "इच्छा" के रूप में किया जाता है; प्रोथेसिस (*πρόθεσις*) का अनुवाद सामान्यतः "उद्देश्य" या "योजना" के रूप में किया जाता है; थेलेमा (*θέλημα*) का अर्थ है "इच्छा" या "अभिलाषा," और यूडोकिया (*εὐδοκία*) का अनुवाद अक्सर "आनंद" के रूप में किया जाता है।

विधिवत धर्मविज्ञान में तकनीकी शब्दों के प्रयोग किए जाने के तरीकों के विपरीत, बाइबल में पाई जानेवाली इन और अन्य अभिव्यक्तियों के विशेष और तार्किक अर्थ नहीं होते। जैसा कि हमने इस श्रृंखला में कई बार कहा है, पवित्रशास्त्र अक्सर विभिन्न अवधारणाओं को दर्शाने के लिए बहुत ही समान शब्दावली का प्रयोग करता है, और वह समान अवधारणाओं को दर्शाने के लिए विभिन्न प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करता है। वास्तव में, ये और इनसे संबंधित अन्य इब्रानी और यूनानी शब्द अक्सर पवित्रशास्त्र में एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग होते रहते हैं। वे अक्सर एक दूसरे के साथ विभिन्न संयोजनों में भी दिखाई देते हैं और कई बार एक दूसरे के स्थान पर भी उनका प्रयोग किया जाता है। अतः जैसे कि हम देखने वाले हैं, परमेश्वर की योजना से संबंधित बाइबल के शब्दों के अर्थ विभिन्न अनुच्छेदों में भिन्न-भिन्न होते हैं।

जब हम परमेश्वर की योजना के बाइबल आधारित दृष्टिकोणों का अध्ययन करते हैं तो इस विविधता को सारगर्भित करने के कई तरीके हैं। परंतु सरलता के लिए, हम अपने ध्यान को उन दो अवधारणाओं पर ही केंद्रित करेंगे जिन पर हमने पिछले अध्याय में विचार-विमर्श किया था। हम इस बात पर विचार करेंगे कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर द्वारा अपनी ईश्वरीय सर्वव्यापकता के संबंध में योजना बनाने के विषय में क्या कहता है। तब हम विचार करेंगे कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर द्वारा अपनी ईश्वरीय उत्कृष्टता के संबंध में योजना बनाने के विषय में क्या कहता है। आइए सबसे पहले इस ओर मुड़ें कि बाइबल परमेश्वर की योजना और उसकी सर्वव्यापकता के बारे में क्या कहती है।

ईश्वरीय सर्वव्यापकता

> पुराने नियम में परमेश्वर आदम और हव्वा के साथ अदन की वाटिका में चलता फिरता था। वहाँ सर्वव्यापकता थी; वहाँ वह निकटता और घनिष्ठता थी जिसे परमेश्वर अपनी सृष्टि और अपने लोगों के साथ अपने संबंध के एक भाग के रूप में रखना चाहता है। स्पष्ट है कि पाप ने उसे प्रभावित कर दिया। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर अचानक से गायब हो गया। उदाहरण के लिए, हम संपूर्ण पुराने नियम में परमेश्वर को एक तंबू स्थापित करते हुए देखते हैं ताकि वह अपने लोगों के साथ रह सके। और इसलिए, यह सर्वव्यापकता वह निकटता है, अपने लोगों के निकट, अपनी सृष्टि के निकट परमेश्वर की उपस्थिति है . . . नए नियम में हम इसे देहधारण के रूप में और अधिक देखते हैं — यूहन्ना 1:14 : "और वचन देहधारी हुआ; और . . . हमारे बीच में डेरा किया।" और इस प्रकार, हम यहाँ प्रभु की अपनी सृष्टि, अपने लोगों के साथ रहने की इच्छा को देखते हैं . . . यह उसकी इच्छा है कि वह अपने लोगों के साथ तंबू मे वास करे। यह उसकी इच्छा है कि वह मसीह के देहधारण के आधार पर अपने लोगों के साथ वास करे। वह हमारे साथ रहने की लालसा करता है; वह अपनी सृष्टि के साथ, अर्थात् हमारे निकट रहने की लालसा करता है।
>
> — डॉ. स्कॉट मैनर

अन्य अध्यायों में हमने सीखा था कि इस ईश्वरीय रहस्य की पुष्टि करना कितना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर उत्कृष्ट भी है और सर्वव्यापी भी। वह उन सीमितताओं से परे है जो सृष्टि में पाई जाती हैं क्योंकि वह असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि से असंबद्ध है, या उसके साथ शामिल नहीं है। इसके विपरीत, बाइबल यह भी सिखाती है कि परमेश्वर सर्वव्यापी है। वह अपने आपको सीमित कर लेता है और अपनी सीमित, अस्थाई और परिवर्तनशील सृष्टि में पूरी तरह से कार्य करता है। और जब हम पवित्रशास्त्र का सर्वेक्षण करते हैं, तो यह देखना कठिन नहीं है कि बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर द्वारा अपनी उत्कृष्टता और सर्वव्यापकता से संबंधित योजना बनाने के बारे में बात की है।

हम कुछ ही पल में देखेंगे कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की योजना और उसकी उत्कृष्टता के बारे में क्या कहता है। परंतु अभी, आइए कुछ ऐसे अनुच्छेदों की ओर मुड़ें जो सृष्टि के साथ परमेश्वर के सर्वव्यापी रूप से कार्य करने के एक पहलू के रूप में परमेश्वर की योजना पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यिर्मयाह 18:7-8 में परमेश्वर ने यह कहा :

> जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि उसे उखाड़ूँगा या ढा दूँगा अथवा नष्ट करूँगा, तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैं ने यह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने की ठानी हो पछताऊँगा। (यिर्मयाह 18:7-8)

इन पदों में, परमेश्वर ने इब्रानी क्रिया *खाशाव* (חָשַׁב), अर्थात् "सोचना," "योजना बनाना," या "निर्धारित करना" का प्रयोग करते कुछ ऐसी बात कही जिसकी उसने *"योजना बनाई"* थी। अब कई संदर्भों में जब मसीही यह सुनते हैं कि परमेश्वर के पास एक "योजना" है, तो वे स्वतः ही यह अनुमान लगा लेते हैं कि बाइबल वह दर्शा रही है जिसे परमेश्वर ने अनंतकाल से निर्धारित किया हुआ है। परंतु यह अनुच्छेद परमेश्वर द्वारा इस तरीके से योजना बनाने की बात नहीं करता है। इसके विपरीत, परमेश्वर की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह योजना सृष्टि के साथ उसकी सर्वव्यापी सहभागिता के आधार पर कार्य करती है। यह किसी "जाति या राज्य" की अवज्ञाकारिता के प्रत्युत्तर में कहा गया है। यह ऐसी जाति के प्रति परमेश्वर की योजना थी कि वह उखाड़ी, ढाई अथवा नष्ट की जाए। और इससे भी बढ़कर, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि यह योजना पलटी भी जा सकती है। जैसा कि हम यहाँ पढ़ते हैं कि, "तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैं ने कह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने की ठानी हो पछताऊँगा।" पवित्रशास्त्र अक्सर दर्शाता है कि परमेश्वर ऐसी कई ऐतिहासिक योजनाएँ बनाता है, ऐसी योजनाएँ जो आती-जाती रहती हैं जब वह अपनी सृष्टि के साथ व्यवहार करता है। इन्हीं बातों के अनुरूप, सुनिए लूका 7:30 परमेश्वर के "अभिप्राय" को किस प्रकार दर्शाता है :

> **परंतु फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उससे बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर के अभिप्राय को अपने विषय में टाल दिया। (लूका 7:30)**

जैसे कि हम यहाँ देखते हैं, यह पद यूनानी शब्द *बूले (βουλή)* अर्थात् "अभिप्राय," "सम्मति," "आदेश" या "इच्छा" का प्रयोग करते हुए परमेश्वर के "अभिप्राय" को दर्शाता है। परंतु इस अनुच्छेद में परमेश्वर का "अभिप्राय" "सम्मति," "आदेश" या "इच्छा" स्पष्ट रूप से परमेश्वर की सर्वव्यापकता के साथ जुड़ा हुआ है, न कि उसकी उत्कृष्टता के साथ। उसका ईश्वरीय अभिप्राय एक विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में उत्पन्न हुआ जब फरीसियों और व्यवस्थापकों को यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लेने के लिए बुलाया गया था। और उसके अभिप्राय को "नकार" दिया गया जब उन्होंने उसके इस आदेश के प्रति समर्पित होने से इनकार कर दिया। अब 1 थिस्सलुनीकियों 5:18 को सुनिए जहाँ पौलुस ने परमेश्वर की "इच्छा" के विषय में यह कहा :

> **हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है। (1 थिस्सलुनीकियों 5:18)**

यहाँ पौलुस ने यूनानी शब्द थेलेमा (*θέλημα*) का प्रयोग करते हुए परमेश्वर की "इच्छा" की ओर संकेत किया। परंतु एक बार फिर से ध्यान दें कि यह पद परमेश्वर की उत्कृष्टता की ओर निर्देशित नहीं है। इसकी अपेक्षा इस अनुच्छेद में पौलुस का विशेष निर्देश परमेश्वर की विशेष इच्छा है : "हर बात में धन्यवाद करो।"

धर्मविज्ञानी अक्सर बाइबल के इस प्रकार के निर्देश को "परमेश्वर की निर्देशात्मक इच्छा" या परमेश्वर की "निर्धारित" आज्ञाएँ कहते हैं। बाइबल के संपूर्ण इतिहास में परमेश्वर ने अपने लोगों से उसकी इच्छा मानने की मांग की। पवित्रशास्त्र में ऐसे सैंकड़ों, शायद हज़ारों स्थान हैं जहाँ परमेश्वर ने अपने लोगों को कुछ विशेष रूपों में कार्य करने, महसूस करने और विश्वास करने के लिए बुलाया। अब, परमेश्वर की निर्देशात्मक इच्छा की ये घोषणाएँ सदैव परमेश्वर के असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय नैतिक चरित्र के सदृश होती हैं। परंतु परमेश्वर ने अपनी निर्देशात्मक इच्छा को तब व्यक्त किया है जब उसने विभिन्न समयों में विभिन्न तरीकों से अपने लोगों के साथ कार्य किया। और परमेश्वर की निर्देशात्मक इच्छा अक्सर अपूर्ण रहती है क्योंकि उसकी सृष्टि अक्सर उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करती है।

केवल एक और उदाहरण के रूप में, सुनिए यीशु ने मत्ती 23:37 में अपनी "इच्छा" या अभिलाषाओं के बारे में क्या कहा :

> **हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परंतु तुमने न चाहा। (मत्ती 23:37)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस अनुच्छेद में यीशु ने यूनानी संज्ञा थेलेमा (*θέλημα*) के क्रिया रूप थेलो (*θέλω*) का प्रयोग करते हुए कहा, "मैंने चाहा।" फिर भी, यह अनुच्छेद परमेश्वर की उत्कृष्टता की ओर संकेत नहीं करता। इतिहास में कई बार यीशु ने "[अपने] बच्चों" को उनके सतानेवालों से बचाने के लिए यरूशलेम में इकट्ठा करने की चाहत, अभिलाषा और इच्छा की। परंतु यीशु की इच्छा पूरी नहीं हुई क्योंकि यरूशलेम के लोगों ने ऐसा "न चाहा।" इस्राएल ने भविष्यद्वक्ताओं और स्वयं यीशु को भी अस्वीकार कर दिया।

ये और कई अन्य समान अनुच्छेद एक ऐसे दृष्टिकोण को दर्शाते हैं जो बाइबल में कई बार पाया जाता है। पवित्रशास्त्र अक्सर यह बताता है कि परमेश्वर योजना बनाता है, अभिप्राय रखता है, सम्मति देता है, और आदेश जारी करता है, और साथ ही साथ यह सृष्टि के साथ उसके सर्वव्यापी, ऐतिहासिक व्यवहारों के घटकों के रूप में उसकी इच्छा और आनंद के बारे में बताता है। और परमेश्वर की ये ऐतिहासिक योजनाएँ सीमित, अस्थाई और अक्सर परिवर्तनशील होती हैं।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि परमेश्वर की योजना के बाइबल आधारित दृष्टिकोण कैसे उसकी ईश्वरीय सर्वव्यापकता पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसलिए आइए हम यह देखें कि पवित्रशास्त्र सृष्टि के ऊपर परमेश्वर की ईश्वरीय उत्कृष्टता के प्रति परमेश्वर की योजना को कैसे निर्देशित करता है।

ईश्वरीय उत्कृष्टता

जैसे कि हम देख चुके हैं, पवित्रशास्त्र निरंतर ऐसे रूपों में परमेश्वर द्वारा योजना बनाने के बारे में बात करता है जो सृष्टि के साथ उसके सर्वव्यापी व्यवहारों पर बल देते हैं। परंतु यह केवल आधी ही तस्वीर है। हम जानते हैं कि परमेश्वर अपनी सृष्टि की सारी सीमितताओं से उत्कृष्ट है। अतः पवित्रशास्त्र ऐसे रूपों में भी परमेश्वर की योजना के बारे में बात करता है जो इस सच्चाई को दर्शाते हैं कि वह उत्कृष्ट है, कि असीमित, अनंत, और अपरिवर्तनीय है। सुनिए किस प्रकार यशायाह 46:10 परमेश्वर के "अभिप्राय" और "आनंद" के बारे में बात करता है :

> **मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा। (यशायाह 46:10)**

यह देखना कठिन नहीं है कि यह अनुच्छेद परमेश्वर की योजना को ऐसे रूपों में प्रदर्शित करता है जो सृष्टि के साथ उसकी ऐतिहासिक सहभागिता के विपरीत खड़े होते हैं। परमेश्वर ने अपने "अभिप्राय" — यात्स (יָעַץ) के मूल यूनानी क्रिया रूप से लिया गया — के विषय में बोला और उसने "अपनी इच्छा को" — इब्रानी शब्द खाफेत्स (חָפֵץ) से लिया गया — पूरी करने के बारे में बात की। परंतु उसने इन शब्दों को अपनी उत्कृष्टता के साथ जोड़ा। उसने इस सच्चाई के बारे में बात की कि वह "अन्त की बात आदि से . . . बताता" है — यह उसकी अनंतता का एक उल्लेख है। और उसने स्पष्ट किया कि उसका अभिप्राय अपरिवर्तनीय है और कि यह असफल नहीं हो सकता। और उसने कहा "मेरी युक्ति स्थिर रहेगी"; "मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।" हम ऐसे ही दृष्टिकोण को अय्यूब 42:2 में पाते हैं, जब अय्यूब ने परमेश्वर के सामने अंगीकार किया :

> **मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रूक नहीं सकती। (अय्यूब 42:2)**

परमेश्वर की उत्कृष्टता के साथ परमेश्वर की योजना का यह संबंध इफिसियों 1:11 के जाने-पहचाने शब्दों में भी प्रकट होता है, जहाँ पौलुस ने यह लिखा :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> **उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने। (इफिसियों 1:11)**

इस अनुच्छेद में कई मुख्य यूनानी शब्द पाए जाते हैं। पौलुस ने परमेश्वर की "मनसा" अर्थात् योजना — प्रोथेसिस (*πρόθεσις*) — उसके "मत" अर्थात् अभिप्राय — बूले (*βουλή*) — और उसकी "इच्छा" — थेलेमा (*θέλημα*) का उल्लेख किया। परंतु इस पद में परमेश्वर की उत्कृष्टता की ओर पौलुस के निर्देश पर ध्यान दें।

पहला, यहाँ दर्शाई गई परमेश्वर की "योजना" संक्षिप्त रूप से केंद्रित नहीं है, बल्कि व्यापक रूप में है; इसमें "सब कुछ" सम्मिलित है। दूसरा, योजना ऐतिहासिक परिस्थितियों में विकसित नहीं होती है; यह अनंत है। वे सभी जो मसीह में "ठहराए" गए थे वे "उसी की मनसा से . . . मीरास बने।" और इफिसियों के इसी अध्याय में पहले, पद 4 में, पौलुस ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर ने "जगत की उत्पत्ति से पहले" ही मसीह में अपने लोगों को चुन लिया था। तीसरा, यहाँ दर्शाई गई परमेश्वर की योजना को रोका नहीं जा सकता; यह अटल है। पौलुस ने लिखा कि परमेश्वर "अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है" बूले (*βουλή*) और थेलेमा (*θέλημα*)।

प्रेरितों के काम 2:23 में शब्द बूले का परमेश्वर की "ठहराई हुई योजना" के रूप में अनुवाद भी सही किया गया है। इस पद में पतरस ने कहा कि "[यीशु] को [रोमियों] के हाथ परमेश्वर की ठहराई हुई योजना के अनुसार पकड़वाया गया।" और प्रेरितों के काम 4:28 में बूले का परमेश्वर की "मति" के रूप में अनुवाद किया गया है जब कलीसिया ने "जो कुछ पहले से [परमेश्वर] की सामर्थ्य और मति से ठहरा हुआ था" के बारे में प्रार्थना की। और इसी शब्द का इब्रानियों 6:17 में "उद्देश्य" के रूप में में अनुवाद किया गया है जहाँ इब्रानियों के लेखक ने दर्शाया कि परमेश्वर "का उद्देश्य बदल नहीं सकता।"

अब, हमने पहले देखा था कि यूनानी शब्द बूले और थेलेमा का प्रयोग कई बार परमेश्वर की ऐतिहासिक, निर्देशात्मक इच्छा के लिए किया जाता है। परंतु इफिसियों 1:11 में जब पौलुस ने परमेश्वर की "मनसा" और "इच्छा" को दर्शाया, तो वह परमेश्वर की निर्देशात्मक इच्छा के बारे में बात नहीं कर रहा था। इसकी अपेक्षा, यह पद उसे दर्शाता है जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर "परमेश्वर की विधान-संबंधी इच्छा" कहते हैं — अर्थात् जिसे परमेश्वर ने एक दृढ़ आदेश के रूप में नियुक्त किया है, कुछ ऐसा जो बिना असफल हुए पूरा होगा।

> **परमेश्वर की अनंत योजना भी अपरिवर्तनीय होनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, अर्थात् वह न बदलनेवाला है। अपरिवर्तनीय होने के रूप में परमेश्वर हमसे कहता है कि वह हमारे जैसा नहीं है। उसे समय के साथ-साथ सीखने, बढ़ने, और विकसित होने की आवश्यकता नहीं है . . .। और क्योंकि वह अपरिवर्तनीय है, इसलिए उसकी अनंत योजना से संबंधित जो कुछ भी उससे निकलता है उसे भी अपरिवर्तनीय होना जरुरी है . . .। और इसलिए, हम जान जाएँगे कि वाटिका में आदम और और हव्वा के पाप से पहले ही, मसीह पृथ्वी की नींव रखे जाने से पूर्व फसह का मेमना बन गया था जो अंततः हमें संभालेगा, जो हमारे पापों के लिए बलिदान भी करेगा। और इसलिए, यह मुझे बताता है कि जो वह है उसके कारण परमेश्वर की योजना अपरिवर्तनीय है, और उसकी अनंत इच्छा पूरी हो रही है।**
>
> **— रेव्ह. लैरी कौकरिल**

यीशु ने परमेश्वर की विधान-संबंधी इच्छा के बारे में यूहन्ना 6:39-40 में यह कहा है :

> और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परंतु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ। क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनंत जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा। (यूहन्ना 6:39-40)

यीशु ने यूनानी शब्द थेलेमा (*θέλημα*) का प्रयोग करते हुए "मेरे भेजनेवाले की इच्छा" और "मेरे पिता की इच्छा" का उल्लेख किया। परंतु यह परमेश्वर की आज्ञा नहीं थी जिसकी अवज्ञा की जा सकती थी। इसकी अपेक्षा, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा पर ऐसे ध्यान दिया जैसे वह बिलकुल निश्चित हो, अर्थात् ऐसी बात जिसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। परमेश्वर की यह इच्छा या आज्ञा थी कि यीशु उनमें से किसी को न खोए जिन्हें पिता ने उसे दिया है। इस अनुच्छेद में पिता की इच्छा यह है कि "जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनंत जीवन पाए।" परमेश्वर की यह इच्छा उसका सर्वोच्च आदेश है। इसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता; इसे पलटा भी नहीं जा सकता।

इस त्वरित सर्वेक्षण से, हमने परमेश्वर की योजना के विषय में पवित्रशास्त्र से दो निर्देशों को देखा है। कई बार पवित्रशास्त्र परमेश्वर की योजना, उसके अभिप्राय, उसकी सम्मति, आदेश, इच्छा और आनंद को उसकी सर्वव्यापकता — अर्थात् सृष्टि के साथ उसके सीमित, अस्थाई और परिवर्तनशील व्यवहारों — के साथ जोड़ता है। अन्य समयों में, वह सृष्टि पर परमेश्वर की असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय उत्कृष्टता पर ध्यान देने के साथ ऐसी ही शब्दावली का प्रयोग करता है। और यह चाहे कितना भी कठिन हो, यदि हम परमेश्वर की योजना के बारे में अपनी समझ में बाइबल आधारित होने की आशा करते हैं, तो हमें इन दोनों दृष्टिकोणों की पुष्टि करने के तरीकों को ढूँढना आवश्यक है।

परमेश्वर की योजना के इन दो बाइबल आधारित दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए, हम अब दूसरे विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : इन विषयों पर सुसमाचारिक लोगों की धर्मवैज्ञानिक मान्यताएँ।

धर्मवैज्ञानिक मान्यताएँ

दुखद रूप से, कई समझदार मसीहियों ने परमेश्वर द्वारा योजना बनाने के विषय पर पवित्रशास्त्र कैसे बात करता है, उसके केवल एक पहलू या फिर उसके दूसरे पहलू पर ही बल दिया है। अतीत में, विशेष प्रोटेस्टेंट संप्रदायों के साथ इन बलों को जोड़ना अपेक्षाकृत आसान होता। सदियों से, बैपटिस्ट, लूथरन, पेंटिकोस्टल, मैथोडिस्ट, प्रेसबिटेरियन, रिफोर्मड, एंग्लीकन कलीसियाओं और प्रोटेस्टेंट कलीसिया की अन्य शाखाओं में भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों का विकास हुआ है। परंतु हाल ही के इतिहास में, कई संप्रदायों को विभाजित करनेवाली रेखाएँ फीकी पड़ गई हैं, और इनमें से कई पारंपरिक निर्देश समाप्त हो गए हैं। अतः हम यहाँ यह चर्चा नहीं करेंगे कि कलीसिया की इस शाखा या उस शाखा की क्या धारणा है। हम बस ऐसी कुछ सामान्य, मूलभूत प्रवृत्तियों को दर्शाएँगे जो आज सब संप्रदायों में पाई जाती हैं।

हम परमेश्वर की योजना के विषय में धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं की विविधता को दो चरणों में देखेंगे। पहला, हम संक्षेप में उन दो उग्र दृष्टिकोणों पर ध्यान देंगे जिनका अनुसरण कुछ सुमसाचारिक लोग करते प्रतीत होते हैं। और दूसरा, हम उस पर ध्यान देंगे जिसे हम इन विषयों पर नरम सुसमाचारिक दृष्टिकोण कह सकते हैं। आइए पहले कुछ उग्र दृष्टिकोणों पर विचार करें :

उग्र दृष्टिकोण

पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान का एक मुख्य महत्व पवित्रशास्त्र द्वारा प्रत्येक विषय पर सिखाई जानेवाली बातों के एक तार्किक रूप से स्पष्ट सारांशों की रचना करना रहा है। और सुसमाचारिक लोगों ने इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कठोर परिश्रम किया जब उन्होंने यह खोज की कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर

की योजना के बारे में क्या सिखाता है। परंतु अक्सर तार्किक निरंतरता को प्राप्त करने की इच्छा हमें परमेश्वर की योजना के विषय में बाइबल की शिक्षाओं के एक या दूसरे पहलू को स्वीकार करने के उग्र रूप की ओर ले जाती है।

समय हमें अनुमति नहीं देगा कि हम इन उग्र दृष्टिकोणों के कई विवरणों को देखें, परंतु हम व्यापक रूपों में बात कर सकते हैं। एक ओर, मसीह के कई समझदार अनुयायी इस ओर झुकाव रखते हैं जिसे हम "नियतिवादी धर्मविज्ञान" कह सकते हैं।

नियतिवादी धर्मविज्ञान। नियतिवादी धर्मविज्ञान ने विभिन्न रूपों को लिया है। परंतु कुल मिलकर, नियतिवाद स्पष्ट करता है कि इतिहास में जो कुछ घटित होता है वह लगभग पूर्ण रूप से परमेश्वर की उत्कृष्ट योजना के आधार पर ही होता है। अब, जैसा कि हम इस अध्याय में देख चुके हैं, बाइबल के कुछ अनुच्छेद इस मान्यता का समर्थन करते हैं कि परमेश्वर की योजना, अभिप्राय, सम्मति, आदेश, इच्छा और आनंद सृष्टि के ऊपर उसकी उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। इस भाव में, अब तक जो कुछ भी हुआ है या जो कुछ भी होगा उसकी आज्ञा परमेश्वर की सर्व-व्यापी, अनंत और अटल योजना के द्वारा दी जा चुकी है। परंतु नियतिवाद इस विषय पर बाइबल की शिक्षा के संपूर्ण अर्थ को प्रकट नहीं कर पाता है। यह उस बात को महत्व देने में विफल जाता है जो बाइबल परमेश्वर की ऐसी योजनाओं, अभिप्रायों, सम्मति, आदेशों, इच्छा और आनंद के विषय में सिखाती है, जो तब विकसित होते हैं जब वह अपनी सीमित, अस्थाई और परिवर्तनशील सृष्टि के साथ व्यवहार करता है।

> मैं एक नियतिवादी नहीं हूँ। मैं मानता हूँ कि जो मैं करता हूँ उसका महत्व है। इसीलिए एक न्यायासन है। मेरा मानना है कि मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं एक रोबोट नहीं हूँ। मैं वास्तव में यह कर रहा हूँ। परंतु मैं यह भी मानता हूँ कि परमेश्वर मेरे कार्यों के द्वारा सीमित नहीं है। वह मेरी आज्ञाकारिता और अवज्ञाकारिता के बावजूद भी अपने अभिप्रायों को पूरा करने के योग्य है। "परमेश्वर सर्वोच्च है और वह टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियों से भी सीधी रेखा खींचता है।" इसलिए, मैं शायद एक टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी हो सकता हूँ, परंतु फिर भी वह सीधी रेखा खींच सकता है। इसलिए जिस बात में हमारा भरोसा है, वह यह नहीं है कि परमेश्वर इतना शक्तिशाली है कि वह हमें एक रोबोट में परिवर्तित कर देता है, परंतु उसकी सामर्थ्य इतनी महान है कि वह हमारी रचना स्वतंत्र रूप से नैतिक लोगों के रूप में करता है . . .। यह है परमेश्वर की सर्वोच्चता की धर्मशिक्षा। स्वतंत्र रूप से नैतिक होना मनुष्यजाति को परमेश्वर के हाथों कठपुतली नहीं बनाता है। परमेश्वर सर्वोच्च रूप से हमारे चुनावों को नियुक्त करता है और अपने अभिप्रायों को उन कार्यों के द्वारा पूरा करता हैं जो हम कर रहे हैं।
>
> — डॉ. हैरी एल. रीडर III

यदि हमें किसी ऐसे व्यक्ति से बातचीत करनी हो जो नियतिवादी धर्मविज्ञान की ओर झुकाव रखता हो, तो हम पा सकते हैं कि वे कई प्रश्नों का उत्तर इन रूपों में देते हैं :

क्या परमेश्वर कुछ योजना बनाता है और फिर वह सृष्टि के साथ व्यवहार करते हुए उसे रद्द कर देता है? नियतिवादी यह कहेगा, "कभी नहीं।"

क्या परमेश्वर की सम्मति या आदेश कभी असफल होते हैं? नियतिवादी दृष्टिकोण में, "निस्संदेह नहीं।"

क्या परमेश्वर की इच्छा या आनंद कभी व्यर्थ हो सकते हैं" नियतिवादी उत्तर देंगे, "असंभव।"

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और, जब बाइबल इन प्रश्नों के भिन्न उत्तरों को दर्शाती प्रतीत होती है, तो नियतिवादी तर्क देते हैं कि पवित्रशास्त्र घटनाओं का विवरण केवल ऐसे देता है जैसे वे मनुष्यों के समक्ष दिखाई देती हैं, न कि जैसी वे सचमुच हैं।

अब नियतिवादी धर्मविज्ञान के प्रति इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए, इस बात पर भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि अब तक की सदियों में बहुत से मसीहियों ने विपरीत उग्र दृष्टिकोणों को भी लिया है। दूसरी ओर, उन्होंने ऐसी विचारधारा को अपना लिया है जिसे हाल ही के दशकों में "खुला धर्मविज्ञान" के रूप में भी जाना गया है।

खुला धर्मविज्ञान। खुले धर्मविज्ञानियों के बीच बहुत विविधता पाई जाती है। परंतु कुल मिलाकर, यह दृष्टिकोण लगभग उन सब बातों की व्याख्या करता है जो इतिहास में परमेश्वर की सर्वव्यापकता के संदर्भ में घटित होता है। हम देख चुके हैं कि इस बात पर विश्वास करने के बाइबल आधारित समर्थन हैं कि परमेश्वर तब कई विभिन्न योजनाओं को बनाता है जब वह अपनी सृष्टि के साथ कार्य करता है। और इस विषय में, जब परमेश्वर अपने सीमित, अस्थाई और परिवर्तनशील संसार के साथ व्यवहार करता है, तो उसकी ऐतिहासिक योजनाएँ, अभिप्राय, सम्मति, आदेश, इच्छा और आनंद सदैव पूरे नहीं होते। परंतु खुला धर्मविज्ञान बाइबल की इस शिक्षा को एक उग्र हद की ओर ले जाता है। यह परमेश्वर की अनंत, सर्वव्यापी, अटल योजना को पूरा महत्व देने में असफल हो जाता है। बहुत से लोग जो इस उग्र दृष्टिकोण को रखते हैं, वे सहमत होते हैं कि परमेश्वर के त्रुटिरहित, अनंत आदेशों के द्वारा कुछ घटनाओं को व्यवस्थित किया गया है। वे अक्सर यह स्वीकार करते हैं कि मसीह के पहले आगमन, उसके महिमामय पुनरागमन का समय, और इतिहास का अंतिम परिणाम परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा के द्वारा निर्धारित किया गया है। परंतु इन कुछ घटनाओं के अतिरिक्त खुले धर्मविज्ञानी सामान्यतः यह मत रखते हैं कि परमेश्वर की योजनाओं, अभिप्रायों और इच्छा की सफलता पूरी तरह से इतिहास पर, विशेषकर उन आत्माओं और मनुष्यों द्वारा लिए गए निर्णयों पर निर्भर होती है।

यदि हमें खुले धर्मविज्ञानियों से बात करनी हो, तो वे कुछ मुख्य प्रश्नों का उत्तर इन रूपों में देने की प्रवृत्ति रखेंगे :

क्या परमेश्वर के पास इतिहास के लिए सर्वव्यापी, अनंत, और अटल योजना है? खुला उदारवादी धर्मविज्ञान कहता है, "नहीं।"

क्या परमेश्वर की सम्मति और आदेश कभी मनुष्य के विद्रोह के कारण असफल होते हैं? इस दृष्टिकोण में, "यह लगभग सदैव संभव है।"

क्या परमेश्वर की इच्छा और आनंद व्यर्थ हो सकते हैं? खुला धर्मविज्ञान उत्तर देगा, "बहुत बार।"

इस उग्र दृष्टिकोण से, जब पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि परमेश्वर के पास एक अनंत, अटल योजना है, तो खुले ईश्वरवादी बल देते हैं कि यह केवल कुछ चुनी हुई घटनाओं को ही दर्शाता है।

> खुला धर्मविज्ञान, या जैसे कि इसे कभी-कभी "खुला ईश्वरवाद" भी कहा जाता है, विशिष्ट अर्मीनियनवाद का एक विभिन्न रूप है। इसमें बहुत सी वैसी बातें पाई जाती हैं, परंतु यह उसका और अधिक उग्र रूप है, विशेष रूप से भविष्य के विषय में परमेश्वर के ज्ञान के बारे में अपने विचारों में। वे "उपस्थितिवाद" नामक एक दृष्टिकोण रखते हैं, जो यह तर्क देता है कि परमेश्वर अतीत के बारे में सब कुछ, वर्तमान के बारे में सब कुछ और भविष्य के बारे में बहुत कुछ जानता है, परंतु . . . किसी स्वतंत्र मानवीय निर्णयों या स्वतंत्र मानवीय निर्णयों पर निर्भर किसी बात को नहीं जानता है। और संपूर्ण कलीसिया के इतिहास में सभी मसीही परंपराओं के विश्वासी इससे असहमत हैं, और अभिपुष्ट करते हैं कि परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> भविष्य को पूरी तरह से जानता है . . . भजन 139 इस विषय में बात करता है कि परमेश्वर हमारे मुँह खोलकर बोलने से पहले ही यह जान लेता है कि हमारी जुबान पर क्या बात है। विशेषकर 1 राजाओं और 2 राजाओं में भविष्यद्वाणियाँ हैं और उनकी पूर्णता है। यशायाह 40-48 इस विषय में बहुत अच्छी शिक्षा देता है कि यहोवा स्वयं को अन्यजातियों के देवताओं से कैसे अलग करता है, विशेषकर भविष्य के अपने ज्ञान के द्वारा। जब हम नए नियम में आते हैं, तो यीशु हमें आश्वस्त करता है कि हमारा पिता हमारे माँगने से पहले ही हमारी आवश्यकताओं को जानता है। वह अपने दुःखभोग, अपनी मृत्यु और अपने कष्टों की भविष्यद्वाणी करने के द्वारा, पतरस के इनकार और यहूदा के विश्वासघात की भविष्यद्वाणी करने के द्वारा भविष्य के विषय में अपने ज्ञान को प्रदर्शित करता है। सच्चाई यह है, कि बहुत से उदाहरण हैं . . . उस संदर्भ में जहाँ यीशु पतरस के इनकार और यहूदा के विश्वासघात दोनों की भविष्यद्वाणी कर रहा है, वहाँ वह अपने शिष्यों से कहता है कि, "अब मैं उसके होने से पहले तुम्हें जताए देता हूँ कि जब यह हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।" यह उसके अपने ईश्वरत्व का दावा है। और इसलिए, प्रश्न यह है, क्या परमेश्वर पुराने नियम और नए नियम में अपने अद्वितीय ईश्वरत्व के इतने बड़े प्रमाण को किसी अनिश्चित बात पर आधारित करेगा, मानो परमेश्वर भविष्य में होने वाली बातों की केवल भविष्यद्वाणी ही कर सकता है, परंतु उन्हें संपूर्ण रूप से जानता नहीं है? इन्हीं कारणों से, सभी मुख्य परंपराओं के विश्वासियों ने यह माना है कि परमेश्वर खुले ईश्वरवाद की शिक्षाओं के विपरीत भविष्य को पूरी तरह से जानता है।
>
> — डॉ. स्टीवन सी. रोय

नियतिवाद और खुले धर्मविज्ञान के उग्र दृष्टिकोणों को मन में रखते हुए, अब हमें परमेश्वर की योजना के विषय में अन्य धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं की ओर मुड़ना चाहिए — जिसे हम परमेश्वर-विज्ञान के इस पहलू के नरम सुसमाचारिक दृष्टिकोण कहेंगे।

नरम दृष्टिकोण

यह कहना उचित होगा कि किसी न किसी तरीके से औपचारिक सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञान की मुख्यधारा ने उन दोनों पहलुओं की पुष्टि की है जिसे पवित्रशास्त्र परमेश्वर की योजना के बारे में सिखाता है। नरम दृष्टिकोण इस बात पर सहमत होते हैं कि परमेश्वर के पास इस विषय में सर्व-व्यापी, अनंत और अटल योजना है कि इतिहास में क्या घटित होगा। और वे उसी बल के साथ इसकी पुष्टि भी करते हैं कि जब परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ कार्य करता है, तो वह कई ऐसी योजनाएँ बनाता है जो अपने कार्यक्षेत्र में सीमित, अस्थाई और परिवर्तनशील होती हैं। ऐसा नहीं है कि यह या वह सत्य है। इसकी अपेक्षा, उन लोगों के विपरीत जो उग्र दृष्टिकोणों की ओर झुकाव रखते हैं, सुसमाचारिक धर्मविज्ञानियों ने बल दिया है कि दोनों दृष्टिकोण सत्य हैं।

जब हम उन तरीकों को अपनाते हैं जिनमें पवित्रशास्त्र परमेश्वर द्वारा अपनी उत्कृष्टता और अपनी सर्वव्यापकता के संबंध में योजना बनाने के बारे में बात करता है, तो हम मसीही विश्वास के कुछ बड़े रहस्यों का सामना करते हैं। मनुष्य इन विषयों को उस सीमा तक समझ सकते हैं जितना परमेश्वर ने इन्हें पवित्रशास्त्र में स्पष्ट किया है। परंतु हम उन्हें कभी ऐसे रूपों में नहीं समझ सकते जो प्रत्येक पहेली का समाधान करते हैं, या ऐसे रूपों में जो पूछे जानेवाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते हैं। इसकी अपेक्षा, बुद्धिमानी इसमें है कि इस विषय का अध्ययन ऐसे किया जाए जैसे हम त्रिएकता और मसीह के दो

स्वभावों का करते हैं। परमेश्वर की योजना में शामिल प्रत्येक रहस्य का समाधान करने की अपेक्षा, हमें बाइबल के इन दृष्टिकोणों के दोनों पहलुओं के विषय में जितना हो सके सीखना चाहिए और यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारी मानवीय समझ सीमित है।

यदि हमें उन धर्मविज्ञानियों से बात करनी हो जो परमेश्वर की योजना के विषय में नरम सुसमाचारिक दृष्टिकोण रखते हैं, तो वे कुछ मुख्य प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार देंगे :

क्या परमेश्वर के पास इतिहास के लिए एक सर्व-व्यापी, अनंत और अटल योजना है? "हाँ।"

क्या परमेश्वर तब विशेष योजनाएँ बनाता है जब वह स्वयं को इतिहास के घटनाक्रम में शामिल करता है? "हाँ।"

क्या परमेश्वर की अनंत योजना, अभिप्राय, सम्मति, आदेश, इच्छा और आनंद बिना विफल हुए पूरे होंगे? "हाँ।"

परंतु क्या परमेश्वर की ऐतिहासिक योजनाएँ, अभिप्राय, सम्मति, आदेश, इच्छा और आनंद निष्फल हो सकते हैं? "हाँ।"

दूसरे शब्दों में सुसमाचारिक धर्मविज्ञान की मुख्यधारा ने पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के दोनों पहलुओं को दर्शाने का प्रयास किया है। यह परमेश्वर की उत्कृष्ट, अनंत और उसकी सर्व-व्यापी, ऐतिहासिक योजनाओं दोनों की पुष्टि करता है।

जहाँ इन नरम दृष्टिकोणों ने सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञान की मुख्यधारा को चित्रित किया है, वहीं उन लोगों के बीच मतभेद भी रहे हैं जो इनका समर्थन करते हैं। हम उन दो मुख्य भिन्नताओं का उल्लेख करेंगे जो अक्सर पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में मुख्य तौर पर सामने आई हैं। आइए पहले उन विभिन्न दृष्टिकोणों पर ध्यान दें जो परमेश्वर के अनंत आदेशों के क्रम पर विकसित हुए हैं।

अनंत आदेशों का क्रम। जब विधिवत धर्मविज्ञानी परमेश्वर के आदेशों के क्रम की ओर संकेत करते हैं, तो उनके मन में इतिहास के लिए परमेश्वर की अनंत योजना में शामिल तत्वों का तार्किक क्रम होता है। मुख्य आदेशों में वे कौन से परस्पर-संबंध हैं जिन्हें परमेश्वर ने सृष्टि के अपने पहले कार्य से पहले नियुक्त किया था? इन दृष्टिकोणों के कई रूप हैं, परंतु कुल मिलाकर इन्हें तीन रूपों में सारगर्भित करने की रीति रही है :

पहला, हमें पतन-पूर्ववाद (सुपरालैपसेरियनिज्म) का उल्लेख करना चाहिए जो कि लैटिन से निकले शब्दों सुपरा अर्थात् "ऊपर" और लेपसुस अर्थात् "पतन" से मिलकर बना है। जैसा कि यह नाम दर्शाता है, अपने लोगों को बचाने के परमेश्वर के आदेश को मनुष्यजाति के पाप में पतन की अनुमति के उसके आदेश से "ऊपर" या पूर्व रखा जाना चाहिए। परमेश्वर के अनंत आदेशों के इस क्रम के दृष्टिकोण को इस प्रकार सारगर्भित किया जा सकता है : पहला, परमेश्वर के चुने हुए लोगों को मसीह में बचाने और अन्य सब लोगों को दंड देने का आदेश; दूसरा, सृष्टि की रचना करने का आदेश; तीसरा, पाप में पतन की अनुमति देने का आदेश; चौथा, मसीह के माध्यम से छुटकारा देने और उसे पूरा करने का आदेश; और पाँचवाँ, सच्चे विश्वासियों पर मसीह में छुटकारे को लागू करने का आदेश।

दूसरा, हम पतनोद्धारवाद (इन्फ्रालैपसेरियनिज्म) का उल्लेख करेंगे जो कि लैटिन से निकले शब्दों इन्फ्रा अर्थात् "नीचे" और लेपसुस अर्थात् "पतन" से मिलकर बना है। जैसा कि यह नाम दर्शाता है, अपने लोगों को बचाने के परमेश्वर के आदेश को मनुष्यजाति के पाप में पतन की अनुमति के उसके आदेश से "नीचे" या बाद में रखा जाना चाहिए। परमेश्वर के अनंत आदेशों के इस क्रम के दृष्टिकोण को इस प्रकार सारगर्भित किया जा सकता है : पहला, सृष्टि की रचना करने का आदेश; दूसरा, पाप में पतन की अनुमति देने का आदेश; तीसरा, परमेश्वर के चुने हुए लोगों को बचाने का आदेश; चौथा, मसीह के माध्यम से छुटकारा देने और उसे पूरा करने का आदेश; और पाँचवाँ, सच्चे विश्वासियों पर मसीह में छुटकारे को लागू करने का आदेश।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तीसरा, हमें उस दृष्टिकोण का उल्लेख करना चाहिए जिसे अक्सर पतनोत्तरवाद (सबलैपसेरियनिज्म) कहा जाता है। यह लैटिन के शब्दों सब, अर्थात् "तले" और फिर से लेपसुस अर्थात् "पतन" से निकला है। इस दृष्टिकोण को कभी-कभी पतनोद्धारवाद (इन्फ्रालैपसेरियनिज्म) की उप-श्रेणी माना जाता है। जैसा कि नाम दर्शाता है, परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाने के अपने आदेश को मनुष्यजाति के पाप में पतन की अनुमति के उसके आदेश के "तले" या बाद में रखा। परंतु इस दृष्टिकोण में, बचाने का आदेश, छुटकारा देने के परमेश्वर के आदेश के बाद आया, न कि पहले। यह दृष्टिकोण इस प्रकार सारगर्भित किया जा सकता है : पहला, सृष्टि की रचना करने का परमेश्वर का आदेश; दूसरा, मनुष्यजाति के पाप में पतन की अनुमति देने का परमेश्वर का आदेश; तीसरा, मसीह के माध्यम से छुटकारा देने और उसे पूरा करने का आदेश; चौथा, विश्वास करनेवालों को बचाने का आदेश; और पाँचवा, विश्वासियों पर मसीह में छुटकारे को लागू करने का आदेश।

यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि अधिकतर इन विभिन्न दृष्टिकोणों का विकास अन्य प्रकार के धर्मवैज्ञानिक प्रश्नों को संबोधित करने में धर्मविज्ञानियों की सहायता करने के लिए किया गया था। परमेश्वर के अनंत आदेशों के क्रम के विषय में विभिन्न दृष्टिकोणों की रचना ने ऐसे प्रश्नों के साथ संघर्ष करने में धर्मविज्ञानियों की सहायता की है :

हम यह निरंतर कैसे कह सकते हैं कि परमेश्वर भला है जब उसकी योजना मनुष्य के पाप में पतन की अनुमति देती है और केवल कुछ ही लोगों को उद्धार प्रदान करती है?

परमेश्वर द्वारा सब लोगों को सुसमाचार प्रदान करने का प्रस्ताव सच्चा कैसे हो सकता है जब परमेश्वर के पास एक सर्व-व्यापी, अनंत और अटल योजना है?

हम मनुष्यों के नैतिक उत्तरदायित्व की पुष्टि कैसे कर सकते हैं जब परमेश्वर हमारे कार्यों के ऊपर सर्वोच्च है?

ये महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। अभी भी, अधिकांश अग्रणी सुसमाचारिक धर्मविज्ञानी यह मानते हैं कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के अनंत आदेशों के तार्किक क्रम को पहचानने के लिए हमें पर्याप्त विवरण नहीं देता है। इसलिए, सामान्यतः जहाँ नरम दृष्टिकोण रखनेवाले सुममाचारिक लोग अब भी एक की अपेक्षा दूसरे दृष्टिकोण का पक्ष लेते है, वहीं हममें से अधिकांश ने सही रूप से यह निष्कर्ष निकाला है कि इन विषयों के बारे में बहुत से अनुमान लगाए जाते हैं। वे मुख्य रूप से उससे परे हैं जो परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में प्रकट किया है।

> जब एक व्यक्ति आदेशों के क्रम के बारे में बात करता है, तो सामान्यतः ऐसी चर्चा परमेश्वर द्वारा कार्यों को करने के तरीके का एक तार्किक क्रम प्रदान करने के प्रयास के फलस्वरूप निकलती है . . . "समय" जैसी किसी भी बात के अस्तित्व से पहले, जिसे हम अब जानते है, परमेश्वर विद्यमान था, इसलिए इसमें अनुमान लगाने का कुछ तत्व है जिसमें हम नहीं जानते कि परमेश्वर को वह कैसा दिखाई देता है। और इसीलिए मुझे लगता है कि सर्वोत्तम धर्मविज्ञानी जब आदेशों के क्रम के बारे में बात करते हैं, तो वे वास्तव में तर्क, सुसंगतता जैसे अस्थाई क्रम के बारे में ज्यादा बात नहीं कर रहे हैं, और उस संरचना में यह बात करने का एक तरीका है ताकि उसे सम्मिलित किया जा सके जो कुछ पवित्रशास्त्र परमेश्वर, और पतन और परमेश्वर की योजना के क्रम आदि के विषय में तार्किक भाव में कहता है, न कि अस्थाई भाव में एक क्रम के रूप में, ताकि यह पवित्रशास्त्र की साक्षी के प्रति विश्वासयोग्य रहे।
>
> — डॉ. डी. ए. कारसन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर के अनंत आदेशों के क्रम के विषय में नरमवादी दृष्टिकोणों का समर्थन करनेवालों के बीच की विभिन्नताओं के अतिरिक्त, सुममाचारिक लोगों में परमेश्वर के अनंत आदेशों और उसके पूर्वज्ञान के बीच के संबंध के विषय में भी विभिन्न दृष्टिकोण पाए जाते हैं।

अनंत आदेश और पूर्वज्ञान। अधिकतर इन विचार-विमर्शों में नए नियम के तीन अनुच्छेदों को दर्शाया जाता है। प्रेरितों के काम 2:23 में पतरस ने कहा कि मसीह का क्रूसीकरण "परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्वज्ञान" के अनुसार हुआ था। 1 पतरस 1:1-2 परमेश्वर के चुने हुओं की ओर संकेत करता है जिन्हें "परमेश्वर के भविष्य के ज्ञान के अनुसार चुना गया है।" और रोमियों 8:29 कहता है कि "जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है।" यह स्पष्ट है कि ये अनुच्छेद परमेश्वर के अनंत आदेशों और उसके पूर्वज्ञान के बीच परस्पर संबंधों की ओर संकेत करते हैं।

कुल मिलाकर, सुमाचारिक लोगों ने दो तरीकों से इन अनुच्छेदों को परमेश्वर के अनंत आदेशों और उसके पूर्वज्ञान के बीच के संबंधों पर लागू किया है। एक ओर, हममें से बहुतों ने यह माना है कि परमेश्वर का पूर्वज्ञान उसके आदेशों का आधार था। दूसरे शब्दों में, अनंतता में, परमेश्वर उस मार्ग को जानता था जिसमें से इतिहास आगे बढ़ेगा। वह समझ गया था कि आत्माओं और मनुष्यों द्वारा किए जानेवाले चुनावों के साथ उसकी सहभागिता सहित सभी घटनाएँ कैसे घटित होंगी। इस पूर्वज्ञान के आधार पर, उसने अनंत योजना का आदेश दिया जिसके द्वारा सभी घटनाएँ बिना विफल हुए घटित होंगी।

दूसरी ओर, बहुत से ऐसे सुसमाचारिक लोग भी हैं जिन्होंने यह माना है कि परमेश्वर के आदेश इतिहास के बारे में उसके पूर्वज्ञान का आधार हैं। इस दृष्टिकोण में, परमेश्वर ने उन सब बातों की योजना बनाई या उसका आदेश दिया जो उसके भले आनंद के अनुसार इतिहास में घटित होगा। और इस अटल योजना ने परमेश्वर को उन सब बातों का पूर्वज्ञान दिया जो इतिहास में घटित होंगी।

इन विषयों पर वाद-विवाद अक्सर अन्य धर्मवैज्ञानिक विषयों से प्रेरित होता है, जैसे कि परमेश्वर की भलाई और मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा। इनमें इन बातों पर असहमति भी शामिल होती है कि क्या परमेश्वर के पूर्वज्ञान के बाइबल के पद घटनाओं के विषय में परमेश्वर केवल पूर्वज्ञान को ही दर्शाते हैं, या फिर उन लोगों के प्रति उसके व्यक्तिगत, प्रेमपूर्ण पूर्वज्ञान को जिन्हें उसने उद्धार के लिए चुना है।

परंतु हम सब कुछ बातों पर सहमत हो सकते हैं। क्या पवित्रशास्त्र यह सिखाता है कि परमेश्वर सब कुछ पहले से ही जानता है? हाँ । क्या पवित्रशास्त्र यह सिखाता है कि परमेश्वर ने अनंत उद्धार सहित सब बातों को पहले से ही नियुक्त कर दिया है? हाँ । अतः हम इन दृष्टिकोणों में से एक को चाहे जितना भी अधिक मानें, अंत में, हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि परमेश्वर के आदेश और उसका पूर्वज्ञान कई रूपों में एक साथ चलते हैं। और हमें यह भी सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि हम अनंतता में विराजमान परमेश्वर के विषय में चर्चा कर रहे हैं, इसलिए सोचने विचारने के हमारे आम तरीके उस पर लागू नहीं होते। परमेश्वर के आदेशों या पूर्वज्ञान की तार्किक प्रमुखता के बारे में सैद्धांतिक बनना उससे परे चले जाना है जो पवित्रशास्त्र प्रकट करता है। जॉन काल्विन ने अपनी इंस्टिट्यूट ऑफ़ क्रिस्चियन रीलिजियन की पुस्तक 3 के अध्याय 21 के भाग 6 में यह तर्क दिया है :

> **हम वास्तव में, दोनों धर्मशिक्षाओं [पूर्वज्ञान और अनंत आदेशों] को परमेश्वर में रखते हैं, परंतु हम कहते हैं कि इन्हें एक दूसरे के अधीन करना बेतुका है।**

काल्विन संपूर्ण इतिहास पर परमेश्वर की उत्कृष्टता में अपने दृढ़ विश्वास के लिए विख्यात था। जैसा कि उसने यहाँ दर्शाया है, पवित्रशास्त्र सटीकता के साथ यह नहीं बताता है कि परमेश्वर का पूर्वज्ञान और उसके अनंत आदेश कैसे परस्पर संबंधित हैं। इसलिए, "इन्हें एक दूसरे के अधीन करना बेतुका है।"

अंततः जब कभी हम परमेश्वर की योजना पर विचार करें, तो हमें याद रखना आवश्यक है कि बाइबल के चित्रण के दोनों पहलू — वे जो नरमवादी सुसमाचारिक दृष्टिकोणों में प्रकट हैं — मसीही जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर जीवन की प्रत्येक परीक्षा और परेशानी पर अधिकार रखता है।

जीवन में सब कुछ वैसे ही होता है जैसे परमेश्वर ने नियुक्त किया है। साथ ही, परमेश्वर बड़ी घनिष्ठता के साथ हमारे जीवनों में सहभागी है। वह अक्सर हमारे द्वारा किए गए चुनावों के आधार पर इतिहास को पहले एक दिशा में और फिर दूसरी दिशा में मोड़ता है। यदि हम इन दृष्टिकोणों में से किसी का इनकार कर देते हैं, तो हम स्वयं को पवित्रशास्त्र की कुछ सबसे जीवंत, जीवनदायक शिक्षाओं से वंचित कर देते हैं। परमेश्वर द्वारा योजना बनाने, अभिप्रायों को रखने, सम्मति देने, और आदेश देने के विषय में बाइबल की शिक्षाओं के दोनों पहलू, और साथ ही साथ इसकी इच्छा और आनंद मसीह के अनुयायी होने के नाते हमारी विश्वासयोग्य सेवा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

> धर्मविज्ञान में एक निरंतर पूछे जानेवाले प्रश्न का संबंध ईश्वरीय उत्कृष्टता और मानवीय स्वतंत्रता, अर्थात् हमारे द्वारा किए जानेवाले चुनावों और परमेश्वर की परम इच्छा और अभिप्रायों के बीच के संबंध से होना चाहिए। और मेरे विचार से आप ऐसे कई धर्मविज्ञानियों को पाएँगे जो शायद उसके दूसरे पहलू की अपेक्षा एक पहलू पर अधिक बल देंगे। मैं सोचता हूँ कि वास्तव में बड़े धर्मविज्ञानी वे हैं जो अपनी बाइबल की संपूर्णता में दोनों पहलुओं को सिखाते हैं। परंतु अपने दृष्टिकोणों की परवाह किए बिना, मेरा मानना है कि हम एक दूसरे से सीख सकते हैं। मैं सोचता हूँ कि वे लोग जो मानवीय चुनाव पर बल देते हैं, वे बाइबल के उन अनुच्छेदों को थोड़ा कम महत्व देने की प्रवृत्ति रखते हैं जो परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में बात करते हैं और यह भी कि यह कितना सर्व-व्यापी है, और कैसे वह सब जो घटित होता है, वही अंततः परमेश्वर का अभिप्राय होता है। और दूसरी ओर,वे लोग जो वास्तव में परमेश्वर की सर्वोच्चता पर बल देना चाहते हैं, उन वास्तविक चुनावों को शायद कम महत्व दें जो लोग करते हैं और शायद संसार में होनेवाली बातों के कारण उन चुनावों के महत्व को भी कम कर दें। और मेरे विचार से हम सबके लिए उन अनुच्छेदों की ओर आकर्षित होना जो हमारे धर्मविज्ञान से सहमत होते है, और फिर थोड़ा बहुत उन्हें स्पष्ट करना या फिर उन अनुच्छेदों को कम महत्व देना जो किसी और के दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, ललचाने वाला होगा। मैं सोचता हूँ कि जितना अधिक हम एक दूसरे के साथ धर्मवैज्ञानिक वार्तालाप में सहभागी होते हैं, उतना अधिक यह हमें पवित्रशास्त्र के प्रत्येक अनुच्छेद की विशेषता को देखने और इसके आशयों के साथ वास्तव में संघर्ष करने में सहायता करता है।
>
> — डॉ. फिलिप रीकन

यह देखने के बाद कि कैसे पवित्रशास्त्र और विधिवत धर्मविज्ञान परमेश्वर की योजना को देखता है, अब हम इस अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : परमेश्वर के कार्य। इस समय, हम यह खोज करेंगे कि कैसे परमेश्वर सृष्टि के लिए अपनी अनंत योजना और अपनी कई ऐतिहासिक योजनाओं को पूरा करता है।

परमेश्वर के कार्य

पवित्रशास्त्र इस बात पर बहुत ध्यान देता है कि परमेश्वर ने इस संसार के इतिहास में क्या किया है, वह क्या कर रहा है, और वह क्या करेगा। बाइबल के इन विषयों के महत्व ने धर्मविज्ञानियों का मार्गदर्शन इसमें किया है कि वे परमेश्वर-विज्ञान में उन पर विशेष ध्यान दें। परमेश्वर-विज्ञान में, विधिवत धर्मविज्ञानी परमेश्वर के सारे कार्यों, अर्थात् उन पद्धतियों की आधारभूत विशेषताओं की खोज करते हैं, जो उसकी सृष्टि के साथ परमेश्वर की सहभागिता को प्रेरित करती हैं।

सदियों से, परमेश्वर के कार्यों के विषय को सामान्यतः दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता रहा है : सृष्टि का कार्य और विधान का कार्य। आइए पहले परमेश्वर के सृष्टि के कार्य को देखें।

सृष्टि

विधिवत धर्मविज्ञानियों ने उस समय पर बहुत ध्यान केंद्रित किया है जब परमेश्वर ने एक्स निहीलो या "शून्य से" रचना की थी। उत्पत्ति 1:1; यूहन्ना 1:3; और इब्रानियों 1:2 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं कि जब तक परमेश्वर किसी वस्तु को अस्तित्व में लेकर नहीं आया, तब तक परमेश्वर के अतिरिक्त किसी का अस्तित्व नहीं था। अतः सुमाचारिक लोगों ने सही रीति में सब प्रकार के बहुईश्वरवाद, अर्थात् इस विश्वास को ठुकरा दिया है कि किसी ईश्वर या ईश्वरों जैसी शक्तियों ने सृष्टि के कार्य में परमेश्वर का साथ दिया था। उन्होंने सब प्रकार के सर्वेश्वरवाद, अर्थात् इस विश्वास को ठुकरा दिया है कि परमेश्वर और उसकी सृष्टि में कोई समानता है। और उन्होंने सब प्रकार के द्वैतवाद, अर्थात् इस विश्वास को ठुकरा दिया है कि जिसे हम सृष्टि कहते हैं वह वास्तव में अनंतकाल से परमेश्वर के साथ अस्तित्व में है। इसकी अपेक्षा, सुसमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञान ने परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बीच पूर्ण भिन्नता को निंरतर बनाए रखा है।

परंतु विधिवत धर्मविज्ञान सृष्टि की रचना के पहले क्षण से आगे भी बढ़ा है, और उसने उस आरंभिक द्विभागी विभाजन के विषय में अध्ययन किया है जिसे परमेश्वर ने सृष्टि में स्थापित किया था। सृष्टि का यह द्विभागी विभाजन कुलुस्सियों 1:16 में प्रकट होता है, जहाँ प्रेरित पौलुस ने यह कहा है :

> **क्योंकि [मसीह] में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी . . . सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गईं। (कुलुस्सियों 1:16)**

यहाँ हम देखते हैं कि पौलुस ने मसीह की ओर ऐसे दर्शाया जिसने सारी वस्तुओं की रचना की है। और उसने उत्पत्ति 1:1 में पाए जानेवाले स्वर्ग और पृथ्वी के बीच के सृष्टि के द्विभागी विभाजन की ओर संकेत किया। परंतु पौलुस दृश्य और अदृश्य के बीच एक समानांतर विभाजन दर्शाते हुए आगे बढ़ा। सृष्टि का यह विभाजन ऐसे कई महत्वपूर्ण विश्वास-कथनों और विश्वास-अंगीकरणों में पाया जाता है जो परमेश्वर को "देखी या अनदेखी . . . सारी वस्तुओं" का सृष्टिकर्ता कहते हैं।

अब, इससे पहले कि हम और आगे बढ़ें, हमें यहाँ यह उल्लेख करना चाहिए कि यशायाह 66:1 जैसे अनुच्छेदों में पवित्रशास्त्र इस द्विभागी विभाजन के दोनों पहलुओं को एकता में लाता है। वहाँ हम यह पढ़ते हैं :

> **आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है। (यशायाह 66:1)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह अनुच्छेद संक्षेप में एक ऐसे दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है जो पवित्रशास्त्र के प्रत्येक पृष्ठ की सतह में पाया जाता है। वास्तव में, सृष्टि परमेश्वर का लौकिक महल या मंदिर है, जिसके ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वी है, अर्थात् ऊपर अदृश्य और नीचे दृश्य है।

पुराने नियम में, इस्राएल के मंदिर की बनावट सृष्टि की इसी द्विभागी पद्धति के आधार पर थी। इसमें एक आंतरिक, ऊँचा कक्ष था, जिसे अतिपवित्र स्थान के नाम से जाना जाता था। यह कक्ष सृष्टि के ऊँचे, अदृश्य लोक में परमेश्वर के शासन को प्रस्तुत करता था। और यह कक्ष मंदिर के नीचे के स्तरों से घिरा रहता था जिसे पवित्र स्थान और बाहरी आंगन या आंगन कहा जाता था। ये दोनों निचले स्तर सृष्टि के निचले, दृश्य लोकों को प्रस्तुत करते थे।

सृष्टि का यह आधारभूत द्विभागी दृष्टिकोण परमेश्वर की सृष्टि के लिए उसके बड़े उद्देश्य को समझने में हमारी सहायता करता है। सरल रूप में कहें तो, इतिहास का लक्ष्य यह है कि ऊँचे, अदृश्य जगत में परमेश्वर का महिमामय शासन नीचे की ओर बढ़ेगा और एक दिन दृश्य संसार के प्रत्येक कोने में फ़ैल जाएगा। और अंत में, परमेश्वर की महिमा संपूर्ण सृष्टि को भर देगी ताकि ऊपर और नीचे का प्रत्येक प्राणी सदा-सदा के लिए उसकी आराधना करेगा। यह आधारभूत दृष्टिकोण उन सब बातों को स्थापित करता है जो बाइबल हमें परमेश्वर के सृष्टि कार्य के बारे में बताती है।

> मानवीय इतिहास का लक्ष्य यह है कि संपूर्ण पृथ्वी दृश्य और सर्वव्यापी मंदिर, वाटिका, परमेश्वर के लोक, और सिंहासन के रूप में परिवर्तित हो जाए। और यह वह उद्देश्य है जिसके साथ बाइबल उत्पत्ति 1 और 2 में आरंभ होती है, कि परमेश्वर ने ऐसे संसार की रचना की जो बहुत अच्छा था, परंतु उसने एक वाटिका बनाई जिसमें उसकी उपस्थिति सर्वव्यापी और दृश्य थी, और यह एक पवित्र स्थान था, और उस पुरूष और स्त्री से कहा गया कि वे फलने-फूलने, भरने, और इसे वश में कर लेने के द्वारा वाटिका का विस्तार करें। और निस्संदेह, पतन के समय, उस योजना में व्यवधान पड़ा, परंतु फिर भी वाटिका में एक प्रतिज्ञा की गई कि स्त्री का एक वंश होगा जो सर्प के सिर को कुचल देगा, वह प्रतिज्ञा अंततः पूरी हो गई। और इस प्रकार, पृथ्वी एक ऐसा स्थान बन गई जहाँ परमेश्वर की महिमा अब से छुपी हुई नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी पृथ्वी है जो परमेश्वर की महिमा से भरी हुई है।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

क्योंकि सृष्टि का यह द्विभागी कार्य बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए हमें सृष्टि के ऊँचे, अदृश्य आयामों और सृष्टि के निचले, दृश्य आयामों दोनों की ओर देखने के लिए कुछ समय बिताना चाहिए। आइए पहले, उन अदृश्य आयामों पर विचार करें जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है।

अदृश्य आयाम

आधुनिक भौतिकवाद ने मसीह के अनुयायियों को इतना प्रभावित किया है कि धर्मविज्ञान के कई गंभीर विद्यार्थी उस पर बहुत ही कम ध्यान देते हैं जो बाइबल सृष्टि के अदृश्य आयामों के बारे में सिखाती है। यह निश्चित है कि बहुत से गंभीर विश्वासी उसके प्रति बहुत ही पूर्वाग्रही हो जाते हैं जो अधिकतर अदृश्य बना रहता है। परंतु शैक्षणिक अध्ययन में हमें विपरीत विचारधारा से सुरक्षित रहना चाहिए। सृष्टि के लिए परमेश्वर की अधिकतर योजना उसके द्वारा आरंभ होती और आगे बढ़ती है जो अदृश्य क्षेत्रों में घटित होता है। इसलिए जब हम परमेश्वर की धर्मशिक्षा का अध्ययन करते हैं, तो हमें उस पर भी ध्यान देना चाहिए जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर "अलौकिक संसार" कहते हैं।

सृष्टि के ऊँचे, अदृश्य आयामों का वर्णन करने के कई तरीके हैं। परंतु अपने उद्देश्यों के लिए, हम पहले अदृश्य क्षेत्रों के प्रबंध को देखेंगे। तब, हम उनमें रहनेवालों को देखेंगे। आइए पहले अलौकिक संसार के प्रबंध के बारे में सोचें।

प्रबंध। सृष्टि के इस आयाम के लिए बाइबल का आधारभूत शब्द "स्वर्ग" या "स्वर्गों" है। दोनों इब्रानी शब्द शामायीम (שָׁמַיִם) और यूनानी शब्द ऊरानोस (οὐρανός) को "स्वर्ग" या "स्वर्गों" के रूप में अनूदित किया जा सकता है। पर कभी-कभी ये शब्द उसे भी दर्शाते हैं जिसे आधुनिक लोग "आकाश" या "अंतरिक्ष" कहते हैं। अतः अलौकिक संसार के विषय में अपने विचार-विमर्श में हम उन समयों पर ध्यान देंगे जब वे ऊँचे क्षेत्रों को दर्शाते हैं — अर्थात् उन क्षेत्रों को मनुष्यों के लिए तब तक अदृश्य बने रहते हैं जब तक परमेश्वर उनके विषय में अलौकिक दर्शन प्रदान नहीं करता है।

पवित्रशास्त्र अदृश्य स्वर्गों के प्रबंध के बारे में अधिक विवरण नहीं देता है, परंतु यह दर्शाता है कि यह काफी जटिल है। उदाहरण के लिए भजन 104:3 जैसे अनुच्छेद परमेश्वर के ऊपरी कक्ष या "अटारी" के बारे में बात करते हैं। 1 राजाओं 8:30, और अन्य कई अनुच्छेदों के अनुसार यह स्वर्गीय कक्ष "[परमेश्वर का] निवास- स्थान है," या इसका अनुवाद ऐसे भी किया जा सकता है "स्वर्ग, जो [परमेश्वर के] सिंहासन का निवास स्थान है।" यशायाह 63:15 इसी स्वर्गीय महल का वर्णन "पवित्र और महिमापूर्ण वासस्थान" के रूप में करता है। इसके अतिरिक्त 2 कुरिन्थियों 12:2 में पौलुस ने रब्बीवादी धर्मविज्ञान से कुछ बातों को लिया और "तीसरे स्वर्ग" के बारे में बात की, और इसे स्वर्गलोक की ऐसी बातें कहीं "जो कहने की नहीं।" और इससे बढ़कर, व्यवस्थाविवरण 10:14; भजन 115:16 और अन्य कई अनुच्छेद "सबसे ऊँचे स्वर्ग" के बारे में बात करते हैं। ये और बाइबल के अन्य कई ऐसे ही अनुच्छेद हमें इस बात के प्रति सचेत करते हैं कि अदृश्य संसार का प्रबंध काफी जटिल है और हमारी समझ से बहुत परे हैं। फिर भी, ये और अन्य कई पद दर्शाते हैं कि अदृश्य, स्वर्गीय क्षेत्रों को परमेश्वर के लौकिक महल के ऊँचे, सर्वश्रेष्ठ आयामों में व्यवस्थित किया गया है।

इस जटिल प्रबंध को पहचानने के अतिरिक्त, हमें सृष्टि के अदृश्य आयामों के निवासियों पर भी ध्यान देना चाहिए।

निवासी। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि स्वर्ग के निवासियों में से सबसे महिमामय निवासी स्वयं परमेश्वर है। परंतु हमें यहाँ सावधान रहना चाहिए। बहुत से लोग स्वर्ग को एक ऐसा स्थान मानते हैं जहाँ परमेश्वर अपनी संपूर्ण उत्कृष्टता में निवास करता है। परंतु बात यह नहीं है। स्वर्ग सृष्टि का एक भाग है। यह सीमित, अस्थाई और परिवर्तनशील है। यद्यपि स्वर्ग दृश्य संसार से ऊँचा है, परंतु फिर भी, यह ऐसा स्थान है जहाँ परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ कार्य करता है। अब 1 राजाओं 8:27 में सुलैमान ने घोषणा की कि परमेश्वर इतना महान है कि वह "स्वर्ग में वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग में भी नहीं समाता।" परंतु उसी प्रार्थना में सुलैमान ने स्वर्ग का वर्णन परमेश्वर के सिंहासन पर विराजमान होने के स्थान के रूप में किया है — अर्थात् ऐसा स्थान जहाँ परमेश्वर अपने लोगों की प्रार्थनाओं को सुनता और उत्तर देता है। अतः स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहाँ परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान होने और अपने स्वर्गीय प्राणियों के साथ कार्य करने के द्वारा सीमित सृष्टि में प्रवेश करता है। हम इसे अय्यूब 1:6-12; दानिय्येल 7:9-11; और लूका 22:31 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। परमेश्वर के सिंहासन का स्वर्गीय कक्ष दृश्य संसार से ऊँचा है। परंतु फिर भी यह सृष्टि का ही भाग है। और इतिहास के आरंभ से, जब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो," तो उसने अपने स्वर्गीय न्यायालय से सृष्टि के राजा के रूप में इतिहास को निर्देश दिया है।

परंतु परमेश्वर ऊँचे, अदृश्य क्षेत्रों का एकमात्र निवासी नहीं है। उदाहरण के लिए, यद्यपि स्वर्ग में भौतिक प्राणियों का प्रवेश करना दुर्लभ बात है, फिर भी यह असंभव नहीं है। प्रेरितों के काम 2:31-33 के अनुसार हम निश्चित रूप से जानते हैं कि यीशु अपनी महिमामय भौतिक देह में अपने पिता दाऊद के सिंहासन तक चढ़ा था। और अब वह स्वर्गीय न्यायालय में पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परंतु अधिकतर स्वर्ग आत्मिक प्राणियों और विश्वासयोग्य लोगों की दिवंगत आत्माओं से भरा हुआ है। वे और उनके कार्य अलौकिक दर्शनों के अतिरिक्त अदृश्य बने रहते हैं। उन्हें मत्ती 8:16 और इब्रानियों 1:14 में "आत्माएँ"; भजन 29:1 और भजन 89:6 में "परमेश्वर के पुत्र"; भजन 89:5,7 और जकर्याह 14:5 में "पवित्र लोग"; दानिय्येल 4:13 और भजन 91:11 में "पहरुआ" और "दूत"; और भजन 148:2 और दानिय्येल 8:10 सहित कई अन्य स्थानों पर "सेना" कहा गया है। भजन 82 अनुसार इनमें से कुछ आत्माओं को पृथ्वी के राष्ट्रों के लिए जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिब्राईल और मीकाईल स्वर्गदूत प्रमुख अगुवे हैं, जो विशेष रूप से चुने हुए लोगों की ओर से परमेश्वर की सेवा करते हैं। करूब परमेश्वर की पवित्रता के प्रहरियों के रूप में सेवा करते हैं, और साराप परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष सेवा करते हैं।

पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि सभी स्वर्गीय आत्माओं की रचना पहले शेष सृष्टि के समान अच्छी आत्माओं के रूप में की गई थी। 1 तीमुथियुस 5:21 में उन आत्माओं को "चुने हुए स्वर्गदूत" कहा गया है जो परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा निरंतर विश्वासयोग्य बनी रहती हैं। परंतु अन्य स्वर्गीय आत्माएँ परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करती हैं। हम इसे यूहन्ना 8:44; 1 तीमुथियुस 3:6; 2 पतरस 2:4; और यहूदा 6 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। हम स्वर्गदूतों द्वारा किए गए इस विद्रोह के बारे में इसके अतिरिक्त कुछ और नहीं जानते कि यह बहुत बड़ा है, और शैतान — और शायद आत्माओं ने भी — आदम और हव्वा के परीक्षा में पड़ने से पहले विद्रोह किया था। अय्यूब 1:6-12; भजन संहिता 82; और 2 इतिहास 18:18-22 दर्शाते हैं कि शत्रु शैतान — जिसे इबलीस और दोष लगानेवाला भी कहा जाता है — और अन्य आत्माएँ जिन्हें दुष्टात्माएँ, शासक और प्रधानताएँ कहा जाता है, समय-समय पर स्वर्गीय न्यायालय में निरंतर सहभागी होती रहती हैं। वे स्वर्ग के न्यायालय की आज्ञा के अनुसार कार्य करती है, और पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करती हैं, यद्यपि बुरी मनसा के साथ ।

परंतु शैतान और अन्य बुरी आत्माएँ स्वर्ग के न्यायालय में सदैव सेवा नहीं करेंगी। इसकी अपेक्षा, उनके लिए अनंत दंड का एक स्थान उन मनुष्यों के साथ-साथ तैयार किया गया है जो परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते हैं।

> हम यहाँ स्वर्गदूतों के संसार के बारे में बात कर रहे हैं; हम स्वर्ग और स्वर्ग के निवासियों के बारे में सोच रहे हैं। परंतु हम उसमें आकाशीय शक्तियों को भी शामिल कर रहे हैं, जैसे कि दुष्टात्माओं की शक्तियाँ, गिरे हुए स्वर्गदूत। और सच्चाई यह है कि परमेश्वर के पास गिरे हुए स्वर्गदूतों पर भी उतना ही अधिकार है जितना कि अच्छे स्वर्गदूतों पर . . .। और हम कई बार सोचते हैं कि गिरे हुए स्वर्गदूतों के पास अच्छे स्वर्गदूतों से ज्यादा स्वतंत्रता है, क्योंकि अच्छे स्वर्गदूत स्वर्ग में परमेश्वर के पूर्ण नियंत्रण में हैं और वे उसकी सेवा करते हैं, जबकि गिरे हुए स्वर्गदूत इस पृथ्वी पर कितनी भी मस्ती और शरारत कर सकते हैं। परंतु बाइबल इसका स्पष्ट उत्तर देती है : परमेश्वर का गिरे हुए स्वर्गदूतों पर भी पूर्ण अधिकार है, जो कुछ भी वे करते है, वह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने उसकी अनुमति दी है. . .। और शैतान जो कुछ भी करता है, यदि आप प्रकाशितवाक्य 13:5-8 में देखें तो जो कुछ पशु, मसीह-विरोधी करता है, वह उसे इतिहास के अंतिम समय के दौरान करता है, वह इसे केवल इसलिए कर पाता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऐसा करने की अनुमति दी है, यहाँ तक कि परमेश्वर के नाम की निंदा करने की भी। अतः परमेश्वर पतित संसार को अपने पूर्ण नियत्रंण में रखता है, और साथ ही परमेश्वर स्वर्गीय संसार को भी अपने पूर्ण नियत्रंण में रखता है।
>
> — डॉ. ग्रांट आर,ओस्बोर्न

अब जबकि हमने परमेश्वर की सृष्टि के अदृश्य आयामों पर विचार कर लिया है, इसलिए आइए हम सृष्टि के दृश्य आयामों, अर्थात् उस भौतिक जगत की ओर मुड़ें जिसके मैं और आप भाग हैं।

दृश्य आयाम

हम परमेश्वर की सृष्टि के दृश्य आयामों के बाइबल के चित्रण को वैसे ही देखेंगे जैसे हमने अदृश्य क्षेत्रों को देखा है। पहला, हम दृश्य संसार के आधारभूत प्रबंध पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम इस जगत के निवासियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आइए पहले सृष्टि के दृश्य आयामों के प्रबंध पर ध्यान दें।

जैसा कि हमने पहले कहा था, पवित्रशास्त्र संपूर्ण सृष्टि को परमेश्वर के आकाशीय महल या मंदिर के रूप में प्रस्तुत करता है। और सदियों से, विधिवत धर्मविज्ञानियों ने यह समझने के लिए उत्पत्ति के पहले अध्याय को देखा है कि परमेश्वर ने अपने महल में दृश्य पहलुओं को कैसे व्यवस्थित किया है। उत्पत्ति 1:2 के अनुसार, दृश्य संसार आरंभ में "बेडौल और सुनसान" था। परंतु पहले सप्ताह के अंत में, उत्पत्ति 2:1-3 में, परमेश्वर ने सृष्टि के आरंभिक, मनोहर प्रबंध को पूरा कर दिया। और उसने अपने स्वर्गीय सिंहासन पर विश्राम किया। अतः दृश्य जगत का आरंभिक प्रबंध क्या था?

हम उत्पत्ति 1 में सीखते हैं कि पहले दिन परमेश्वर ने अपने महल के दृश्य क्षेत्रों में दिन और रात, या प्रकाश और अँधेरे की स्थापना की। और दूसरे दिन, परमेश्वर ने दृश्य आकाश और समुद्रों की स्थापना की। और तीसरे दिन, परमेश्वर ने अपने आकाशीय महल के धरातल पर सूखी भूमि और पेड़-पौधों को स्थापित किया।

> जब आप ब्रह्मांड को देखते हैं तो आप उस अविश्वनीय बुद्धि और सामर्थ्य को देखते हैं जो परमेश्वर के पास ब्रह्मांड की रचना करने में थी। प्रत्येक वस्तु का आकार, अर्थात् दूरियाँ इत्यादि, बहुत ही अद्भुत है। हमारे तारक-पुंज, हमारे पास हज़ारों-हज़ारों तारक-पुंज हैं . . . सब कुछ को बहुत ही अद्भुत रूप से आकर दिया गया है, और इन सब में परमेश्वर की बुद्धि बहुत स्पष्ट है और स्वयं को प्रकट करती है। और एक भाव में परमेश्वर इन सब बातों की रचना शून्य से करता है . . . । अद्भुत बुद्धि और सामर्थ्य संपूर्ण सृष्टि में, ब्रह्मांड इत्यादि में बहुत ही स्पष्ट है।
>
> — डॉ. फ्रैंक बार्कर

दृश्य संसार के प्रबंध को ध्यान में रखते हुए, आइए विचार करें कि परमेश्वर द्वारा सृष्टि करने के कार्य का बाइबल का विवरण कैसे दृश्य जगत के निवासियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

अब, कभी-कभी अदृश्य स्वर्गों के निवासी स्वर्ग के ईश्वरीय राजा के अभिप्रायों को पूरा करने के लिए दृश्य संसार में प्रकट होते हैं। और बाइबल ऐसे असँख्य परमेश्वर-दर्शनों को या स्वयं परमेश्वर के दृश्य प्रकटीकरणों को बाइबल के इतिहास में दर्शाती है। वह अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के समक्ष प्रकट हुआ। वह इस्राएल के समक्ष स्वप्नों और दर्शनों में, और आग और धुँए के खंबे में प्रकट हुआ। और निस्संदेह, जैसा नया नियम सिखाता है, परमेश्वर मसीह के देहधारण और उसकी पृथ्वी पर की सेवकाई में प्रकट हुआ।

परंतु उत्पत्ति का पहला अध्याय प्रमुख रूप से भौतिक जगत के सामान्य-दृश्य निवासियों पर ध्यान केंद्रित करता है। उदाहरण के लिए, पहले दिन परमेश्वर ने उजियाले और अंधकार को एक दूसरे से अलग किया। फिर बाद में, चौथे दिन उसने सूर्य, चंद्रमा और तारों को रखा कि वे दिन और रात में वास करें और उन पर प्रभुता करें। दूसरे दिन परमेश्वर ने दृश्य आकाश और समुद्रों को स्थापित कर दिया था। तब, पाँचवे दिन उसने उनमें वास करने के लिए पक्षियों और समुद्री जंतुओं की रचना की। तीसरे दिन परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ने सूखी भूमि और पेड़-पौधों की स्थापना की। तब छठे दिन उसने पशुओं और मनुष्यों को वहाँ रखा। दृश्य जगत के ये सभी निवासी परमेश्वर की सृष्टि के लिए परमेश्वर के अभिप्रायों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। परंतु उत्पत्ति 1:26-31 के अनुसार केवल मनुष्यजाति के पास परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता में होने की विशेष भूमिका है। उत्पत्ति 1:28 के शब्दों को सुनिए :

> और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:28)

> मनुष्यजाति को पुरूष और स्त्री में परमेश्वर के स्वरूप में रचे जाने का क्या अर्थ है? धर्मविज्ञानियों के बीच में इस विषय को लेकर बहुत विवाद रहा है कि इसका वास्तव में क्या अर्थ है, परंतु पुराने नियम के विद्वान सीरिया के तैल फाखारिया की खोज से अवगत हैं जहाँ उन्होंने एक शासक की प्रतिमा को पाया, और यह उस प्रतिमा को उस शासक . . . की "स्वरूप और समानता" कहती है। अतः उत्पत्ति 1 पर यह इस प्रकाश को डालती है कि परमेश्वर के स्वरूप के रूप में कैसे मनुष्यों को यदि वे चाहें तो परमेश्वर की प्रतिमाएँ बनना है, या इस संसार के वास्तविक राजा के रूप में परमेश्वर के प्रतिनिधि बनना है। अतः जब मैं "स्वरूप धारकों" के विषय को सोचता हूँ, तो मैं उनके बारे में सोचता हूँ जिन्हें उसको प्रस्तुत करने के लिए या इस संसार में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के लिए बुलाया गया है जब वे इस सृष्टि की देखभाल करते हैं।
>
> — एंड्रू आबेरनेथी, Ph. D.

जैसे कि उत्पत्ति का दूसरा अध्याय स्पष्ट करता है, आरंभ में परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में रखा। पृथ्वी पर की यह पवित्र वाटिका इतनी सिद्ध, इतनी सुंदर, इतनी पवित्र थी कि परमेश्वर अपनी दृश्य महिमा में इसमें निरंतर प्रकट होता था। परंतु इतिहास का लक्ष्य यह था कि वाटिका की सिद्धता, सुंदरता और पवित्रता पृथ्वी के दूर-दूर के कोनों तक पहुँच जाए। इस रीति से, परमेश्वर की दृश्य महिमा के लिए यह उचित होगा कि वह अपनी स्तुति के लिए प्रत्येक स्थान में प्रकट हो। और संपूर्ण संसार में पवित्रता तथा परमेश्वर की महिमा के विस्तार का प्राथमिक माध्यम मनुष्यजाति थी जिसे परमेश्वर के स्वरूप और समानता में रचा गया था। परमेश्वर के अनुग्रहकारी सशक्तिकरण, और प्रत्येक भौतिक और आत्मिक शत्रु के विरूद्ध स्वर्गदूतों के कार्य के द्वारा मनुष्यजाति में से छुटकारा पाए हुए लोगों के लिए यह ठहराया गया कि वे परमेश्वर की सेवा में इतिहास के उद्देश्य को पूरा करें।

इसी कारण, पवित्रशास्त्र और सुमाचारिक विधिवत धर्मविज्ञान परमेश्वर के सिद्ध स्वरूप और समानता में होने के रूप में मसीह की भूमिका पर बहुत बल देते हैं। न केवल उसने अपने छुड़ाए हुए लोगों के पापों का मूल्य चुकाया, बल्कि जब नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की रचना करने के लिए मसीह का पुनरागमन होगा, तो वह पृथ्वी को परमेश्वर के पवित्र स्वरूपों से भर देगा और सब बातों को नया बना देगा। परमेश्वर की दृश्य महिमा सृष्टि के संपूर्ण अदृश्य और दृश्य क्षेत्रों में चमकेगी जिससे प्रत्येक प्राणी परमेश्वर की आराधना करेगा। जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पियों 2:10-11 में लिखा है :

> कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलिप्पियों 2:10-11)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह देख लेने के बाद कि कैसे सृष्टि के प्रबंध और निवासी इतिहास में परमेश्वर के कार्यों के लिए मंच तैयार करते हैं, अब हमें परमेश्वर के विधान के अधीन इतिहास के आगे बढ़ने की ओर मुड़ना चाहिए।

विधान

लैटिन धर्मवैज्ञानिक शब्द प्रोविडेंशिया परमेश्वर द्वारा उसकी अनंत योजना को क्रियान्वित करते समय सृष्टि पर "ध्यान देने" उसे "संभालने" या उसकी "देखभाल करने" के बारे में बात करता है। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, विधान में कई विभिन्न गतिविधियाँ शामिल होती हैं क्योंकि यह परमेश्वर की संभालने वाली सामर्थ्य है जो हर समय सब बातों को संभाले रखती है। परमेश्वर-विज्ञान के अतिरिक्त, विधिवत धर्मविज्ञान के विषय परमेश्वर के विधान के विशेष पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, विशेषकर, इस बात पर कि परमेश्वर इतिहास में पाप और उद्धार पर कैसे ध्यान देता है। परंतु परमेश्वर-विज्ञान ने परमेश्वर के विधान की उन पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित किया है जो सारे इतिहास की नींव हैं, अर्थात् ऐसी पद्धतियाँ जो परमेश्वर द्वारा उसकी सृष्टि की देखभाल के प्रत्येक पहलू को चित्रित करती हैं।

> शब्द "विधान" वास्तव में लैटिन भाषा से निकला है और आधारभूत रूप से इसका अर्थ पहले से देख लेना या पहले ही देख लेना है, परंतु अंततः यह प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर नजर रखे हुए है, वह देख रहा है, दृष्टि लगाए हुए है, और सारी सृष्टि की देखभाल कर रहा है . . . विधान की यह अवधारणा ऐसी कई अन्य धर्मशिक्षाओं के साथ बँधी हुई है जिन्हें मेरे विचार से मसीहियों ने इस संबंध में दुर्भाग्यवश खो दिया है कि कैसे परमेश्वर वास्तव में हमारी देखभाल करता है। वह अपनी सृष्टि की देखभाल करता है . . . और वह बात राहत देती है। यह परमेश्वर की भलाई का भाव देती है और यह भी कि वह दूर रहनेवाला परमेश्वर नहीं है, कि वह क्रोधित परमेश्वर नहीं है, कि वह ऐसा परमेश्वर है जो आवश्यकता पूरी करने में प्रसन्न होता है, कि वह ऐसा परमेश्वर है जो जानता है कि वह क्या कर रहा है और जो सब बातों को अपने उद्देश्य और अपनी योजनाओं के अनुसार आगे बढ़ा रहा है।
>
> — रेव्ह. डॉ. लुईस विंकलर

पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानियों ने उस भिन्नता पर निर्भर रहने के द्वारा जिसका उल्लेख हमने पहले के एक अध्याय में किया है, परमेश्वर के विधान की पद्धतियों की खोज की है। एक ओर तो उन्होंने परमेश्वर का उल्लेख प्रथम कारक के रूप में किया है, जो इतिहास में घटित होनेवाली प्रत्येक घटना का परम कारक है। और दूसरी ओर, उन्होंने सृष्टि के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख दूसरे कारक के रूप में किया है, अर्थात् अदृश्य और दृश्य क्षेत्रों के वे विभिन्न पहलू जो इतिहास में घटनाओं के घटित होने का कारण भी बनते हैं।

अब, यहाँ पर बहुत सी ऐसी बातें हैं जो परमेश्वर के विधान में इस भिन्नता के बारे में कही जा सकती हैं। परंतु समय की कमी के कारण, हम केवल दो पहलुओं पर ध्यान देंगे। पहला, हम द्वितीय कारकों के महत्व पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम परमेश्वर और द्वितीय कारकों के बीच परस्पर संबंध को देखेंगे। आइए पहले द्वितीय कारकों के महत्व पर विचार करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

द्वितीय कारकों का महत्व

वेस्टमिंस्टर विश्वास अंगीकार के "विधान" नामक शीर्षक के भाग के साथ आरंभ करना सहायक होगा। पाँचवें अध्याय के दूसरे अनुच्छेद में, हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> यद्यपि, परमेश्वर के पूर्वज्ञान और आदेश, अर्थात् पहले कारक के संबंध में सब बातें अपरिवर्तनीय, और त्रुटिरहित रूप से पूरी होती जाती हैं : परंतु फिर भी, उसी विधान के द्वारा वह द्वितीय कारक के स्वभाव के अनुसार उनके पतन का आदेश भी देता है, फिर यह चाहे आवश्यक रूप से हो, स्वतंत्र रूप से हो या आकस्मिक रूप से।

जैसा कि हम यहाँ देख सकते हैं, यह अनुच्छेद इसकी पुष्टि करने द्वारा आरंभ होता है जिसे हमने परमेश्वर की योजना के विषय में नरम सुसमाचारिक दृष्टिकोण कहा है। यह इस तथ्य की ओर ध्यान को आकर्षित करता है कि "सब बातें अपरिवर्तनीय, और त्रुटिरहित रूप से पूरी होती जाती हैं," "परमेश्वर के पूर्वज्ञान और आदेश, अर्थात् पहले कारक के संबंध में।" जैसे कि हमने पहले चर्चा की है, पवित्रशास्त्र सिखाता है कि इतिहास की प्रत्येक घटना परमेश्वर की सर्व-व्यापी, अनंत और अटल योजना के अनुरूप घटती है। परंतु अक्सर, मसीह के अनुयायी उसे स्वीकार करने से चूक जाते हैं जिसे अंगीकार शीघ्रता के साथ यहाँ पर जोड़ता है। यह घोषणा करता है कि परमेश्वर सब बातों का "द्वितीय कारक के स्वभाव के अनुसार पतन का आदेश भी देता है।" यह अभिव्यक्ति मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों के बीच ऐसे जटिल विवादों को प्रदर्शित करती है जो आज तक चलते आ रहे हैं। इन विवादों के विवरण इस अध्याय की सीमा से परे के हैं। परंतु हम इस विषय का एक सारांश प्रदान करेंगे।

सदियों से, कई धर्मविज्ञानियों और दर्शनशास्त्रियों ने यह तर्क दिया है कि परमेश्वर सारी बातों का पहला कारक ही नहीं, बल्कि एकमात्र कारक है। यह ऐसा है कि मानो सृष्टि का प्रत्येक तत्व निर्जीव कठपुतली है और सारी ऐतिहासिक घटनाएँ परमेश्वर द्वारा सृष्टि पर प्रत्यक्ष रूप से कार्य करने के फलस्वरूप घटित होती हैं, जैसे कि वह एक बड़ा लौकिक कठपुतली चालक हो। इस दृष्टिकोण में, यदि परमेश्वर प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत रूप से कार्यों को संचालित नहीं करता है, तो कुछ घटित नहीं होता है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपने अंडाकार कक्ष में इसलिए घूमती है क्योंकि परमेश्वर इसे ऐसे घुमाता है। पेड़ बड़े होते हैं क्योंकि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से उन्हें बढ़ाता है। जानवर चलते फिरते हैं और मछलियाँ समुद्र में तैरती है क्योंकि परमेश्वर स्वयं इन्हें चलाता है। और इस दृष्टिकोण में, मनुष्य और अदृश्य आत्माएँ अच्छा और बुरा कार्य करने को चुनती हैं और क्योंकि परमेश्वर उनके लिए ये चुनाव करता है।

अब, यह सच है कि परमेश्वर संपूर्ण सृष्टि को संभालता है। जैसे पौलुस ने प्रेरितों के काम 17:28 में लिखा है, "क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं।" परंतु जैसा कि हम देखने वाले हैं, सृष्टि बस ऐसे ही प्रतीक्षा नहीं करती रहती जब तक परमेश्वर कार्यों को संचालित करने के लिए उन्हें नियंत्रित नहीं करता। इसकी अपेक्षा, पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर ने सृष्टि के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न क्षमताएँ प्रदान की हैं ताकि वे ऐतिहासिक घटनाओं के दूसरे महत्वपूर्ण कारकों के रूप में सच्चाई के साथ कार्य करें।

> उदाहरण के लिए, जब हम यह कहते हैं कि वेस्टमिंस्टर विश्वास-अंगीकार में सब कुछ का प्राथमिक कारक परमेश्वर ही है, परंतु साथ ही वह द्वितीय कारकों का प्रयोग करता है, उन्हें स्थापित करता है और उनकी पुष्टि करता है तो हमारे कहने का क्या अर्थ है। और इसलिए इस बात की पुष्टि करने के लिए भाषा को बहुत ही सावधानी के साथ चुना गया है कि जो कुछ लोग करते हैं वह महत्वपूर्ण है; इसलिए शब्द "कारक" को उसके लिए रखा गया है, परंतु परमेश्वर ही पूर्ण रूप

> से सर्वोच्च है, इसलिए इसके साथ "द्वितीय" लिखा गया है . . . परमेश्वर ही प्रथम कारक है। अनुग्रह के माध्यम — प्रचार करना, बाइबल के पदों को याद करना, साझा करना, सुसमाचार प्रचार करना, प्रार्थना करना, प्रभु भोज, बपतिस्मा — ये सब बातें जिन्हें परमेश्वर ने रखा है, वे द्वितीय कारक है, जिन्हें हम अपनाते हैं। इसलिए हम बोते हैं, हम पानी देते हैं, परंतु परमेश्वर उन्हें बढ़ाता है। प्रत्येक किसान इसे समझता है। एक किसान बीज बोता है, वहाँ मिट्टी है, वहाँ बीज है, और अब क्या होने वाला है? वह इसे बढ़ा नहीं सकता। केवल परमेश्वर इसे बढ़ा सकता है। परंतु परमेश्वर ने उसे ऐसे माध्यम दिए हैं जिनका उसे उपयोग करना है : द्वितीय कारक, बीज बोना और पानी देना।
>
> — डॉ. हैरी एल. रीडर III

सुनिए किस प्रकार अंगीकार ऐसे तीन तरीकों पर बल देने के द्वारा इसे स्पष्ट करता है जिनमें सृष्टि के पहलू ऐतिहासिक कारकों के रूप में कार्य करते हैं। वह ऐसा या तो "आवश्यक रूप से, स्वतंत्र रूप से या आकस्मिक रूप से" करते हैं। आइए देखें कि इस शब्दावली का क्या अर्थ है।

पहला, हम इतिहास में द्वितीय कारकों के महत्व को देखते हैं जब वे "आवश्यक रूप से" कार्य करते हैं। संक्षेप में, शब्द "आवश्यक रूप से" उन तरीकों की ओर संकेत करता है जिनमें परमेश्वर की सृष्टि के कई पहलू यांत्रिक रूप से, या हम कह सकते हैं, कि प्रकृति के नियमित नियमों के द्वारा उसके उद्देश्यों को पूरा करते हैं। सूर्य की किरणें आवश्यक रूप से पृथ्वी को गर्म करती हैं। पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण की शक्ति वस्तुओं को भूमि पर गिराती है। रसायनिक प्रतिक्रियाएँ विशेष परिणामों को उत्पन्न करती हैं। अनैच्छिक जैविक प्रक्रियाओं के पूर्वानुमेय, यांत्रिक प्रभाव होते हैं। यह सूची बढ़ती ही जाएगी। लगभग उत्पत्ति 8:22 के समान जो दिन और रात, ठंडे और गर्म, ग्रीष्मकाल और शीतकाल के पूर्वानुमेय चक्र की बात करता है, परमेश्वर ने सृष्टि को ऐसे व्यवस्थित किया है ताकि असँख्य द्वितीय कारक आवश्यक परस्पर संबंधों के द्वारा इतिहास को उसके लक्ष्य की ओर बढ़ाएँ।

दूसरा, द्वितीय कारकों के आवश्यक या यांत्रिक कार्य जितने भी महत्वपूर्ण हों, वे भी "स्वतंत्रता के साथ" घटनाओं के घटने का कारण बनते हैं।

शब्द "स्वतंत्रता के साथ" द्वितीय कारकों के ऐसे कार्यों को दर्शाता है जो यांत्रिक नहीं हैं। द्वितीय कारक "स्वत्रंतता के साथ" कार्य करते हैं, इस भाव में कि उनके कार्यों के परिणाम आवश्यक रूप से वैसे नहीं है जैसे द्वितीय कारकों ने निर्धारित किए थे। परमेश्वर परिणामों को अपने पूर्ण नियंत्रण में रखता है, परंतु द्वितीय कारकों के दृष्टिकोण से उनके कार्यों के कई प्रभाव अनियमित, असावधानीवश, या शायद आकस्मिक होते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन 21:13 जैसे अनुच्छेद गैरइरादतन पापों के बारे में बात करते हैं। 1 राजाओं 22:29-34 ऐसे समय के बारे में बात करता है जब राजा आहाब को "अनियमित" रूप से छोड़ा गया एक तीर लगा। पवित्रशास्त्र बार-बार स्वीकार करता है कि द्वितीय कारकों के स्वतंत्र या गैरइरादतन परिणाम अक्सर परमेश्वर के विधान में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

तीसरा, अंगीकार इस बात पर ध्यान देता है कि द्वितीय कारक परमेश्वर के विधान के भीतर न केवल आवश्यक और स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं, बल्कि "आकस्मिक" रूप से भी। शब्द "आकस्मिक रूप से" उन तरीकों को दर्शाता है जिनमें मनुष्यों और आत्माओं का सुविचारित चुनाव इतिहास में घटनाओं के होने का कारण बनते हैं। अब, परमेश्वर सब बातों को जानता है और, इस भाव में, उसके ईश्वरीय दृष्टिकोण से कोई भी बात आकस्मिक नहीं है। परंतु पवित्रशास्त्र बार-बार इस बात पर बल देता है कि परमेश्वर के स्वैच्छिक प्राणियों के आकस्मिक चुनाव इतिहास के प्रवाह को आकार देते हैं। उत्पत्ति 2:17 में परमेश्वर ने आदम को चेतावनी दी कि यदि वह वर्जित फल को खाएगा तो उसे मृत्यु को सहना

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पड़ेगा। और उसके इस आकस्मिक चुनाव के परिणामों ने इतिहास के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। वास्तव में, पाप के श्राप से अनंत उद्धार को प्राप्त करने में भी मानवीय चुनाव मुख्य है। जैसे कि पौलुस रोमियों 10:9 में लिखता है, हम उद्धार पाएँगे "यदि" हम यह घोषणा करें कि यीशु ही प्रभु है और "यदि" हम यह विश्वास करें कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया।

वास्तविकता में, किसी भी परिस्थिति में द्वितीय कारकों का महत्व सभी तीनों कार्यों के किसी संयोजन में प्रकट होता है। परमेश्वर इतिहास की रचना करता है ताकि द्वितीय कारक इतिहास के प्रवाह को आवश्यक, स्वतंत्र और आकस्मिक रूप से प्रभावित करें।

परमेश्वर के विधान में द्वितीय कारकों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, अब हम इस स्थिति में हैं कि परमेश्वर और द्वितीय कारकों बीच परस्पर-संबंधों पर विचार करें। यह कैसे होता है कि जब परमेश्वर इतिहास के लिए अपनी योजना को क्रियान्वित करता है तो वह उन द्वितीय कारकों को काम में लाता है जिनकी उसने रचना की है? पवित्रशास्त्र का सर्वेक्षण करने पर कौन सी पद्धतियाँ प्रकट होती हैं?

परमेश्वर और द्वितीय कारक

वेस्टमिंस्टर विश्वास अंगीकार के पाँचवे अध्याय का तीसरा पहरा इस प्रश्न को बहुत ही सहायक रूप में संबोधित करता है। वहाँ हम यह पढ़ते हैं :

> परमेश्वर, अपने सामान्य विधान में, माध्यमों का प्रयोग करता है, परंतु फिर भी वह अपनी इच्छा के अनुसार उनके बिना, उनसे बढ़कर, और उनके विरुद्ध कार्य करने में स्वतंत्र है।

इस पहरे के अंतिम वाक्यांश पर अधिक बल देना कठिन होगा। परमेश्वर "अपनी इच्छा के अनुसार" द्वितीय कारकों से संबंध बनाता है। वह उनके साथ वैसा ही करता है, जैसा वह चाहता है, जब वह चाहता है और जैसा वह चाहता है। परमेश्वर द्वितीय कारकों के साथ इस या उस तरीके से कार्य करने के लिए बाध्य नहीं है। परंतु फिर भी, अंगीकार का यह भाग परमेश्वर के "सामान्य विधान" और कैसे वह द्वितीय कारकों के साथ विशेष तरीकों से कार्य करने के लिए "स्वतंत्र" है, के बीच एक महत्वपूर्ण भिन्नता प्रकट करता है।

परमेश्वर और द्वितीय कारकों की ओर देखते हुए इस भिन्नता को थोड़ा विस्तार से देखना सहायक होगा। इसलिए आइए पहले परमेश्वर के सामान्य विधान को देखें। और फिर हम उसके विशेष विधान की ओर मुड़ेंगे। आइए सामान्य विधान से आरंभ करें।

सामान्य विधान। एक तरह का परस्पर संबंध सामान्य रूप से द्वितीय कारकों के साथ परमेश्वर के कार्य करने को चित्रित करता है। जैसे कि विश्वास-अंगीकार लिखता है, परमेश्वर माध्यमों का प्रयोग करता है। या इस तरह से लिखें तो, परमेश्वर सामान्य रूप से उन द्वितीय कारकों के द्वारा कार्य करता है जिनकी उसने रचना की है।

हम दृश्य जगत के क्षेत्र में इसे आसानी से देख सकते हैं। परमेश्वर पौधों का पोषण कैसे करता है? सामान्य रूप में, वह यह मिट्टी में पाए जानेवाले पोषक तत्वों, पानी और सूर्य के प्रकाश के द्वारा करता है। परमेश्वर मनुष्यों को कैसे जीवित रखता है? सामान्यतः वह भोजन, ऑक्सीजन, पानी इत्यादि का उपयोग करता है। वास्तव में, पवित्रशास्त्र स्पष्ट कर देता है कि परमेश्वर द्वितीय कारकों का प्रयोग करने के द्वारा संपूर्ण जगत में मसीह के उद्धार देनेवाले कार्य को भी फैलाता है। सुनिए किस प्रकार रोमियों 10:14-15 उस सामान्य तरीके का वर्णन करता है जिसमें लोग मसीह में विश्वास की ओर आते हैं :

> फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? और

> यदि भेजे न जाएँ, तो कैसे प्रचार करें? जैसा लिखा है, "उनके पाँव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!" (रोमियों 10:14-15)

परंतु परमेश्वर अपने सामान्य विधान में दृश्य द्वितीय कारकों का ही उपयोग नहीं करता है। पूरे पवित्रशास्त्र में हम पाते हैं कि परमेश्वर अदृश्य द्वितीय कारकों का भी उपयोग करता है : स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं, और यहाँ तक कि शैतान का भी। जैसा कि हम भजन 103:20-21 में पढ़ते हैं :

> हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो! हे यहोवा की सारी सेनाओ, हे उसके टहलुओ, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो! (भजन 103:20-21)

इस तथ्य के असँख्य अर्थ हैं कि परमेश्वर सामान्य रूप से दृश्य और अदृश्य द्वितीय कारकों का उपयोग करता है जब वह अपनी सृष्टि के साथ परस्पर संबंध बनाता है। परंतु विधिवत धर्मविज्ञानी अक्सर ईश्वरीय-न्याय विधान, अर्थात् बुराई के अस्तित्व के दृष्टिकोण में परमेश्वर की भलाई की प्रमाणिकता की ओर मुड़ते हैं। यह समझना कि परमेश्वर द्वितीय कारकों के माध्यम से अपनी योजना को कैसे पूरा करता है, हमारी यह समझने में सहायता करता है कि परमेश्वर तब भी कैसे पवित्र और भला हो सकता है जब उसकी सृष्टि में बुराई पाई जाती है। परमेश्वर का सामान्य विधान इस विषय पर कम से कम दो तरीकों से प्रकाश डालता है।

पहला, पवित्रशास्त्र इस विषय में स्पष्ट है कि परमेश्वर बुराई के ऊपर सर्वोच्च है। यह पूरी तरह से उसके नियत्रंण में है। अय्यूब 1:6-12 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं कि परमेश्वर अपने स्वर्गीय सिंहासन से शैतान को अपने कार्य में लगाता है। और जैसे यीशु ने लूका 22:31-32 में पतरस को समझाया था :

> शमौन, हे शमौन! देख, शैतान ने तुम लोगों को माँग लिया है कि गेहूँ के समान फटके, परंतु मैं ने तेरे लिये विनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे। (लूका 22:31-32)

इसीलिए, मत्ती 6:13 में यीशु ने अपने शिष्यों को इस तरह से प्रार्थना करना सिखाया :

> और हमें परीक्षा में न ला, परंतु बुराई से बचा। (मत्ती 6:13)

जैसे कि यीशु के शब्द यहाँ दर्शाते हैं, हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें बुराई से बचाए क्योंकि वह परमेश्वर के नियत्रंण में है।

> जब हम बाइबल में ईश्वरीय शक्तियों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि शायद शैतान दूसरा सबसे शक्तिशाली व्यक्ति है। परंतु मेरे लिए यह बहुत बड़ा आश्वासन है कि वह सर्वव्यापी नहीं है, वह सर्वज्ञानी नहीं है, उसमें सर्व जैसा कुछ भी नहीं है . . . वह परमेश्वर जैसा नहीं है। वह परमेश्वर के विपरीत है। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर और शैतान के पास एकसमान शक्तियाँ हैं और वे एक ही समय पर लड़ाई करते हुए एक प्रहार यहाँ करते हैं और दूसरा वहाँ। नहीं, शैतान तो परमेश्वर के कहीं आस-पास भी नहीं आता . . . हम पाते हैं कि अक्सर वह विश्वासियों की प्रार्थनाओं और उनकी सामर्थ्य, या विश्वासियों के बीच की एकता के द्वारा हारा हुआ है, ये सब वे विभिन्न तरीके हैं जिनका वर्णन बाइबल करती है कि कैसे शैतान को पराजित किया जा सकता है। और पवित्र आत्मा उसे रोकता है जिससे वह कार्य नहीं कर पाता है। अतः, हाँ, वह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> शक्तिशाली है, परंतु वह एक बड़े भाव में सीमित है, और परमेश्वर की सामर्थ्य के आस-पास कुछ भी नहीं आ सकता है।
>
> — डॉ. सुखवंत एस. भाटिया

जहाँ पहली बात यह है कि परमेश्वर बुराई के ऊपर पूरी तरह सर्वोच्च है, वहीं दूसरी बात यह भी है कि परमेश्वर का सामान्य विधान दर्शाता है कि परमेश्वर स्वयं बुराई का कारक नहीं है। इसकी अपेक्षा, परीक्षाएँ अप्रत्यक्ष रूप से बुरे द्वितीय कारकों के माध्यम से आती हैं। सुनिए किस प्रकार याकूब 1:13 इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है :

> जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। (याकूब 1:13)

ध्यान दें कि याकूब यह कहता है कि हमें दो कारणों से परीक्षा का दोष परमेश्वर पर नहीं लगाना चाहिए। एक ओर, "न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है," क्योंकि परमेश्वर भला है, और बुराई उसे किसी भी तरह से प्रलोभित नहीं कर सकती। और दूसरी ओर, "न [परमेश्वर] किसी की परीक्षा आप करता है।" यह शाब्दिक अनुवाद यहाँ उचित रूप से दर्शाता है जो यूनानी मूललेख में स्पष्ट है। "परमेश्वर आप" परीक्षा नहीं करता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर प्रत्यक्ष रूप से हमें बुराई में धकेलने की परीक्षा में नहीं डालता है। इसकी अपेक्षा, वह यह गैरलौकिक प्राणियों जैसे शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के द्वारा करता है। और जैसे कि याकूब भी 1:14 में इस पर ध्यान देता है, मानवीय द्वितीय कारकों की बुरी प्रवृत्तियों के कारण परीक्षा सफल हो जाती है। याकूब लिखता है :

> परंतु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। (याकूब 1:14)

हमारी अपनी बुरी अभिलाषाओं के कारण परीक्षाएँ सफल हो जाती हैं। अंत में, परमेश्वर द्वारा द्वितीय कारकों का सामान्य उपयोग स्पष्ट करता है कि कैसे परमेश्वर बुराई के ऊपर सर्वोच्च तो है, परंतु वह बुराई का रचियता नहीं है। जबकि सभी बातें उसकी अनंत योजना के अनुसार पूरी होती हैं, वहीं बुराई की जिम्मेदारी उन गैरलौकिक और प्राकृतिक द्वितीय कारकों पर होती है जो उसकी आज्ञा के विरूद्ध विद्रोह करते हैं जिसने उन्हें रचा है।

इस बात पर बल देने के अतिरिक्त कि कैसे परमेश्वर अपने सामान्य विधान में द्वितीय कारकों का उपयोग करता है, हमें परमेश्वर के विशेष विधान को भी स्वीकार करने के प्रति आश्वस्त होना चाहिए।

विशेष विधान। जैसे कि अंगीकार का अध्याय पाँच, अनुच्छेद तीन में लिखा है, परमेश्वर "अपनी इच्छा के अनुसार [माध्यमों] के बिना, उनसे बढ़कर, और उनके विरुद्ध कार्य करने में स्वतंत्र है।" वास्तव में, अंगीकार दर्शाता है कि परमेश्वर विशेष तरीकों से अपनी सृष्टि के साथ कार्य करता है, ऐसे तरीकों में जिन्हें हम अक्सर ईश्वरीय हस्तक्षेप, या आश्चर्यकर्म कहते हैं। कई बार वह द्वितीय कारकों का उपयोग किए "बिना" ही घटनाओं को घटित होने देता है। दूसरे शब्दों में, वह इतिहास में प्रत्यक्ष रूप से कार्यों को करता है। अन्य समयों पर, परमेश्वर घटनाओं को इतिहास में ऐसे होने देता है जो द्वितीय कारकों से "ऊपर" हैं। अर्थात्, वह द्वितीय कारकों के सामान्य प्रभावों से परे जाता है। और अन्य समयों पर, परमेश्वर द्वितीय कारकों के "विरूद्ध" भी कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर द्वितीय कारकों के सामान्य परिणामों को उलट देता है, विशेषकर तब जब वह बुराई में से भलाई को निकालता है।

बाइबल विशेष विधान के बहुत से उदाहरणों को प्रकट करती है, ऐसे समय जब परमेश्वर इतिहास में घटनाओं को द्वितीय कारकों के बिना, बढ़कर और विरूद्ध घटित कराता है। पुराने नियम में, विधान के इन विशेष कार्यों की रचना अक्सर परमेश्वर के प्रतिनिधियों जैसे राजाओं, भविष्यद्वक्ताओं और याजकों के अधिकार को प्रमाणित करने के लिए चिह्नों के रूप में की गई थी। नए नियम में विशेष विधान अक्सर यीशु और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के अधिकार की साक्षी देता है। परंतु असाधारण या विशेष विधान परमेश्वर की आशीषों और दंडों के अन्य नाटकीय प्रदर्शनों को भी शामिल करता है, तब भी जब वे परमेश्वर के विशेष सेवकों के अधिकार के साथ निकटता से संबंधित नहीं होते।

हमारे समय में भी, परमेश्वर ऐसे तरीकों में कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं जैसी हम अपेक्षा नहीं करते। निश्चित है कि जब हम अपने संसार को जाँचते हैं, तो हम हर मोड़ पर परमेश्वर के सामान्य विधान को देखते हैं। और हमें आभारी होना चाहिए कि किन रूपों में वह हमारे जीवनों के प्रत्येक दिन द्वितीय कारकों का प्रयोग करता है। परंतु साथ ही, मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों को परमेश्वर के विशेष विधान का अनुभव करने की भी अपेक्षा करनी चाहिए। जब वे द्वितीय कारक जिनका परमेश्वर सामान्य रूप में हमारे जीवनों में प्रयोग करता है, असफल हो जाते हैं, तो हमें स्वयं परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे उसके विश्वासयोग्य लोगों ने सदियों से किया है। हमें इतिहास में उसके विशेष हस्तक्षेप के लिए पुकारना चाहिए, क्योंकि वह सदैव सृष्टि के प्रत्येक पहलू के बिना, उससे बढ़कर और उसके विरूद्ध कार्य करने के लिए स्वतंत्र बना रहता है। कुछ भी उसे रोक नहीं सकता।

उपसंहार

"परमेश्वर की योजना और कार्य" पर आधारित इस अध्याय में हमने यह खोज की है कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान ने बाइबल के दृष्टिकोणों और विविध धर्मवैज्ञानिक विचारधाराओं से परमेश्वर की योजना के साथ कार्य किया है। परमेश्वर के पास एक सर्व-व्यापी, अनंत और अटल योजना है जिसके द्वारा वह सारे इतिहास को व्यवस्थित करता है। परंतु वह कई सीमित, अस्थाई और परिवर्तनशील योजनाएँ भी बनाता है, जब वह पल दर पल अपनी सृष्टि के साथ परस्पर संबंध बनाता है। और हमने यह भी खोज की है कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञानी सृष्टि और विधान में परमेश्वर के कार्यों को दर्शाते हैं। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के दृश्य और अदृश्य दोनों आयामों की रचना की और वह अपने सामान्य और विशेष विधान के द्वारा उन सबको स्थिर रखता है, ताकि वे उसके भले आनंद को पूरा कर सकें और उसे अनंत महिमा प्रदान करें।

पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के विषय में बाइबल की कई विभिन्न शिक्षाओं को संगठित करने के सहायक तरीके प्रदान किए हैं, जब वे परमेश्वर की योजना और कार्यों का अध्ययन करते हैं। परंतु इससे बढ़कर, इस अध्याय में इन विषयों के बारे में हमने जो देखा है, वह मुझे और आपको हमारे प्रतिदिन के जीवनों के लिए बहुमूल्य व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। हम अपने पतित संसार में चाहे परमेश्वर की आशीषों के अद्‌भुत कार्यों का आनंद लें या कष्टों की परीक्षाओं का सामना करें, पवित्रशास्त्र परमेश्वर की योजना और उसके कार्यों के बारे में जो भी सिखाता है, वह हमें सामर्थी बनाता है और हमारी अगुवाई मसीह और उसके राज्य की विश्वासयोग्य सेवा में करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।